ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
गुर गिआन अंजन सचु नेत्री पाइआ ॥
अंतरि चानणु अगिआनु अंधेरु गवाइआ ॥

मासिक
गुरमति ज्ञान

पौष-माघ, संवत् नानकशाही ५४६
वर्ष ८ अंक ५ जनवरी **2015**

संपादक : सिमरजीत सिंघ
सहायक संपादक : जगजीत सिंघ

चंदा

सालाना (देश)	१० रुपये
आजीवन (देश)	१०० रुपये
सालाना (विदेश)	२५० रुपये
प्रति कापी	३ रुपये

चंदा भेजने का पता
सचिव, धर्म प्रचार कमेटी
(शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी)
श्री अमृतसर-१४३००६
फोन : 0183-2553956-60
एक्सटेंशन नंबर
वितरण विभाग **303** संपादकीय विभाग **304**
फैक्स : 0183-2553919
e-mail : gyan_gurmat@yahoo.com
website : www.sgpc.net

विषय-सूची

गुरबाणी विचार	२
संपादकीय	३
प्रकृति-प्रेमी श्री गुरु हरिराय साहिब	६
-डॉ. अमृत कौर	
युगांतरी महानायक (कविता)	८
-डॉ. सुरिंदरपाल सिंघ	
श्री गुरु हरिराय साहिब	९
-डॉ. रछपाल सिंघ	
बेकसां-रा यार गुर गोबिंद सिंघ	१०
-डॉ. सुरिंदर कौर	
अध्यात्म का उत्कर्ष श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी	१४
-डॉ. सत्येंद्रपाल सिंघ	
श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का व्यक्तित्व	१८
-स. गुरदीप सिंघ	
बाबा दीप सिंघ जी शहीद	२०
-डॉ. कशमीर सिंघ 'नूर'	
भाई निगाहिया सिंघ आलमगीर	२२
-सिमरजीत सिंघ	
श्री हरिमंदर साहिब : निर्माण का ऐतिहासिक विवरण	२६
-डॉ. राजेंद्र सिंघ 'साहिल'	
पटना साहिब	२९
-प्रो. लाल मोहर उपाध्याय	
श्री गुरु ग्रंथ साहिब में अहंकार-निषेध का संकल्प	३३
-डॉ. नवरत्न कपूर	
श्री गुरु तेग बहादर साहिब की बाणी की विशेषताएं	३६
-डॉ. चंचल बाला	
मित्र प्रकृति पर प्रहार (कविता)	४०
-श्री प्रशांत अग्रवाल	
. . . सुपने जिउ संसारु ॥	४१
-स. रणवीर सिंह	
गुरबाणी चिंतनधारा : ८७	४२
-डॉ. मनजीत कौर	
ख़बरनामा	४७

गुरबाणी विचार

भली सुहावी छापरी जा महि गुन गाए ॥
कित ही कामि न धउलहर जितु हरि बिसराए ॥१॥ रहाउ ॥
अनदु गरीबी साधसंगि जितु प्रभ चिति आए ॥
जलि जाउ एहु बडपना माइआ लपटाए ॥१॥
पीसनु पीसि ओढि कामरी सुखु मनु संतोखाए ॥
ऐसो राजु न कितै काजि जितु नह त्रिपताए ॥२॥
नगन फिरत रंगि एक कै ओहु सोभा पाए ॥
पाट पटंबर बिरथिआ जिह रचि लोभाए ॥३॥
सभु किछु तुम्हरै हाथि प्रभ आपि करे कराए ॥
सासि सासि सिमरत रहा नानक दानु पाए ॥४॥ *(पन्ना ७४५)*

पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी सूही राग में उच्चारण किए गए उपरोक्त शबद में प्रभु-नाम-सिमरन की बरकत से मिलने वाले मानसिक संतोष की बात कर रहे हैं तथा अमीरी-गरीबी दोनों अवस्थाओं में प्रभु-नाम-सिमरन को ही सर्वोपरि दर्शा रहे हैं।

फरमान है कि वह झोपड़ी भी अच्छी है, भली है, सुखदायी है जिसमें निवास करने वाला मनुष्य प्रभु के गुण गाता है अर्थात् प्रभु का नाम-सिमरन करता है। दूसरी तरफ वे पक्के महल, बड़े-बड़े मकान भी किसी काम के नहीं अर्थात् कोई सुखदायी नहीं, जिनमें निवास करने वाला मनुष्य प्रभु को याद नहीं करता, प्रभु को भुलाए रखता है, प्रभु का नाम-सिमरन नहीं करता। वह स्थान जहां प्रभु को याद किया जाता है, उसकी याद में साधसंगत की जाती है, वहां (सांसारिक रूप से) गरीबी होते हुए भी सदा आनंद बना रहता है। ऐसा बड़ा कहलवाना किसी काम का नहीं, जिसके कारण मनुष्य प्रभु को भुलाकर सांसारिक माया में गलतान रहता है। अगर मन में प्रभु-नाम का सिमरन चलता हो तो गरीबी की अवस्था में चक्की पीसकर अर्थात् सख़्त मेहनत करके, कंबली ओढ़कर अर्थात् सादे पहरावे में भी मन को संतोष मिलता है अर्थात् गरीबी की दशा में यदि मनुष्य के पास प्रभु-नाम-सिमरन का धन है तो वह सदा संतोषी रहता है। दूसरी तरफ, कोई राज्य प्राप्त करके भी यदि मन में संतोष नहीं, तृप्ति नहीं, तो ऐसा राज्य किसी काम का मत समझो। जिस मनुष्य के मन में एक परमात्मा की याद है, वो चाहे नग्न अवस्था में भी रहे, (लोक-परलोक में) शोभा कमाता है। दूसरी तरफ ऐसे रेशमी वस्त्र पहनने व्यर्थ हैं, जिनमें मस्त होकर मनुष्य सांसारिक मोह-माया का और भी लोभ करता रहता है। गुरु जी मन को संतोष देने वाले प्रभु-नाम-सिमरन की याचना करते हुए प्रभु को संबोधित होते हुए कहते हैं कि हे प्रभु! सब कुछ आपके हाथ में है। मनुष्य से आप जैसा कराओ वो वैसा ही करता है अर्थात् प्रभु की कृपा से ही नाम-सिमरन की दात बख़्शिश होती है। हे प्रभु! अपने दर से यह दान प्रदान करो कि हम श्वास-श्वास आपका नाम-सिमरन करते रहें (जिससे हमारा मन संतोषी बन सांसारिक मोह-माया की भटकना में गलतान होने से बच जाए)।

उपरोक्त शबद का भावार्थ यह है कि मनुष्य सांसारिक पदार्थों को एकत्र कर, हासिल कर भले ही अमीर बन जाए, बड़ा बन जाए, मगर यदि उसके मन में संतोष नहीं तो ये सारे हासिल किए पदार्थ किसी काम के नहीं हैं। यदि मनुष्य अति गरीबी की अवस्था में जीवन गुज़ार रहा है तथा प्रभु को याद करता हुआ उसका शुक्राना करता हुआ मन में संतोष बनाए रखता है तो ऐसे मनुष्य का जीवन सफल कहा जाएगा। ☸

सम्पादकीय

पंजाब में सुगंधित तंबाकू बेचने पर पूर्ण पाबंदी

तंबाकू एक ऐसा नशीला पदार्थ है जो मानवीय शरीर में प्रवेश कर जाने के बाद अनेकों ख़तरनाक बीमारियों को जन्म देता है। तंबाकू का सेवन करने वाले व्यक्ति से बहुत ही दुर्गंध आती है। कैंसर जैसी घातक बीमारियां भी ज्यादातर तंबाकू से ही पैदा होती हैं। सिगरेट, बीड़ी एवं हुक्के के रूप में तंबाकू को जलाकर उसके धुएं का सेवन सांस द्वारा करके फिर नासिका एवं मुंह द्वारा बाहर निकाल दिया जाता है। इससे जहां तंबाकू का घातक असर सेवन करने वाले पर होता है वहीं साथ ही उसके पास बैठे अन्य व्यक्तियों पर भी असर उससे कहीं ज्यादा घातक होता है, क्योंकि इससे सेवन करने वाले व्यक्ति के शरीर के अंदर के कीटाणु भी उसके साथ मिल जाते हैं।

सिक्ख गुरु साहिबान ने इसकी घातकता का अंदाज़ा दूरंदेशी से लगाते हुए सिक्खों पर तंबाकू सेवन करने की पूर्ण रूप से पाबंदी लगा दी थी। गुरु साहिबान द्वारा कायम किए इस नियम को सिक्खों के दसतूर-उल-अमल (रहित-मर्यादा) में भी शामिल किया गया है, जिस पर सिक्ख बहुत ही जिम्मेदारी से पहरा दे रहे हैं। इन सबके बावजूद गत समय के दौरान पंजाब में तंबाकू की खपत बढ़ती जा रही थी। इसका एक बड़ा कारण प्रवासी मज़दूरों का पंजाब में बड़ी मात्रा में आना है, जो अल्प आयु में इस नामुराद आदत के आदी हो जाते हैं। इसके अलावा मंडीकरण की दौड़ में पैसे इकट्ठा करने वाली कंपनियों द्वारा तरह-तरह के ढंग-तरीके अपनाकर तंबाकू की खपत को बढ़ाना तथा मीडिया द्वारा नौजवानों को तंबाकू पीने की ओर आकर्षित करना आदि कारण भी हैं।

पंजाब सरकार द्वारा इसकी रोकथाम के लिए काफी लंबे समय से कोशिश की जा रही थी। २७ नवंबर, २०१४ ई को पंजाब सरकार ने सुगंधित तंबाकू बेचने पर पूर्ण तौर पर पाबंदी लगा दी है। पंजाब सरकार ने लगभग दो वर्ष पहले तंबाकू की मिलावट वाले गुटखों आदि की बिक्री पर भी पाबंदी लगाई थी। पंजाब सरकार के स्वास्थ्य सचिव तथा ड्रग कमिश्नर श्री हुसन लाल द्वारा नोटिफिकेशन जारी करके समूह ज़िलाधिकारियों, ज़िला पुलिस मुखियों तथा स्वास्थ्य विभाग में काम करते खुराक अमले को सुगंधित तंबाकू के साथ-साथ शुद्ध निकोटीन रसायन वाली 'ई-सिगरेटों' की बिक्री को रोकने के बारे में हिदायतें जारी कर दी गई हैं। पंजाब सरकार द्वारा सिगरेट तथा अन्य तंबाकू उत्पादों की रोकथाम के लिए कोटपा एक्ट को पूरे राज्य में सख़्ती से लागू करने के लिए ज़िला स्तर पर ज़रूरी दिशा-निर्देश जारी कर दिए गए हैं। तंबाकू तथा सिगरेटनोशी को रोकने के लिए ज़िला प्रशासन की ज़िम्मेदारी लगा दी गई है। कोटपा एक्ट का उल्लंघन करने वालों के विरुद्ध ज़िला प्रशासन को कार्यवाही करने के लिए पूर्ण अधिकार दे दिए गए हैं। कोटपा एक्ट की धारा-४ के अनुसार सार्वजनिक स्थानों पर तंबाकू सेवन करने के

दोषियों को २०० रुपए जुर्माना किया जा सकता है। जबकि जगह के मालिक या प्रबंधक को गुनहगारों की गिनती के बराबर जुर्माना किया जा सकता है। कोटपा एक्ट की धारा-५ के अनुसार तंबाकू उत्पादों के विज्ञापन पर पाबंदी लगा दी गई है। ऐसा जुर्म करने वाले दोषी को २ वर्ष की कैद या १०००/- रुपए जुर्माना होगा। कोटपा एक्ट की धारा-६ के अनुसार १८ वर्ष के कम उम्र के व्यक्ति तथा किसी शैक्षणिक संस्था के १०० गज़ के अंदर तंबाकू उत्पादों की बिक्री पर पाबंधी लगा दी गई है। इसका उल्लंघन करने वाले व्यक्ति को २००/- रुपए जुर्माना होगा। कोटपा एक्ट की धारा-७, ८ तथा ९ के अनुसार तंबाकू उत्पादों की बिक्री करने वालों के लिए भी सख़्त नियम तय किए गए हैं।

सरकार द्वारा अपनी कार्यवाही कर दी गई है। अब हमारी जिम्मेवारी है कि हम सरकार को योगदान दें तथा अपनी जिम्मेदारी निभाएं ताकि पंजाब नशा-मुक्त हो जाए। नौजवानों में नशे के सेवन की सबसे पहली शुरूआत शराब या तंबाकू से ही होती है, जो बढ़ती-बढ़ती खतरनाक नशों के सेवन तक पहुंच जाती है। महिलाएं इस रोकथाम में अपनी विशेष भूमिका अदा कर सकती हैं। इस सम्बंध में बीबी चरनो द्वारा निभाई गई भूमिका प्रसिद्ध है।

मेरठ ज़िले में बढला सिंह नामक गांव है। यह गांव बहुत ही रणनीक स्थान तथा नहर के किनारे पर किला प्रीषत गढ़ गांव से लगभग डेढ़ मील की दूरी पर आबाद है। १८वीं शताब्दी में किला प्रीषत गढ़ का राजा नैन सिंघ गुज्जर महाराजा पटियाला के जत्थे से खंडे-बाटे की पाहुल प्राप्त करके सिंघ सज गया। राजा नैन सिंघ ने अपनी फौज में भी सिंघों की भर्ती कर ली। राजा नैन सिंघ ने उनमें से दो सिंघों की बहादुरी से खुश होकर बढला सिंह गांव में ज़मीन इनाम के रूप में दी। इन दोनों सिंघों की औलाद आज भी इस गांव में बसती है। ये सिंघ पुराने समय से ही ज़िला मेरठ की पंजाबी जट्ट बिरादरी के साथ रिश्ते-नाते करते आ रहे हैं। ये पंजाबी जट्ट इस इलाके के लगभग ६० गांवों में आबाद हैं। इन पर उदासी संतों का काफी प्रभाव था। स्थानीय लोगों की देखा-देखी इन लोगों में भी हुक्के-तंबाकू का रिवाज़ पड़ गया था। बढला सिंह गांव के सरदार निआदर सिंघ की सुपुत्री बीबी चरनो का विवाह गांव मादपुर के नौजवान के साथ हो गया। इसी गांव में बीबी चरनो की मौसी रहती थी जिसने बिचोले की भूमिका निभाई थी। बीबी चरनो का ससुराल-घर अच्छा खाता-पीता एवं गांव में अच्छा रसूख रखता था। इस घर में भी हुक्के का प्रयोग किया जाता था और इलाके के रिवाज़ के अनुसार घर आए मेहमान की इज्जत हुक्का पेश करके की जाती थी। बीबी चरनो ने अपने माता-पिता से सिक्ख धर्म की शिक्षा प्राप्त की हुई थी। यह सिक्ख इतिहास एवं रहित-मर्यादा से पूरी तरह से अवगत थी। बीबी चरनो ने अपने धर्म पर पहरा देते हुए घर में एलान कर दिया कि कोई भी आदमी उसके घर में चौंके पर हुक्का नहीं चढ़ाएगा। बीबी चरनो का ससुर बहुत ही सूझवान बुजुर्ग था। उसने बीबी चरनो के जज़बातों की कद्र करते हुए सारे परिवार को बोल दिया कि कोई भी आदमी हुक्का-चिलम या तंबाकू लेकर चौंके में न जाए।

बीबी चरनो की इस बात की चर्चा पूरे गांव में फैल गई। उस दिन से कुटुंब, बिरादरी या आस-पड़ोस के किसी भी सज्जन की बीबी चरनो के घर से हुक्के के लिए आग मांगने की

हिम्मत न पड़ी। घर में भी एक तरह से सब ने हुक्के-तंबाकू को त्याग दिया। एक दिन चौपाल पर बैठे हुए कुछ आदमियों में बीबी चरनो की इस बात की चर्चा छिड़ गई। इसी सभा में बीबी चरनो की मौसी का बेटा भी बैठा था जो चिलम का प्रयोग कर लेता था। वह बोल पड़ा कि चरनो मेरी बहन है। मैं उसके चूल्हे से अपनी चिलम के लिए आग ला सकता हूं। लोगों ने समझाया कि वो तेरी बहन ज़रूर है परंतु वो सिंघों की पुत्री है। सिक्खी के मुकाबले वो किसी सगे-सम्बंधी की परवाह नहीं करती। उसने तो अपने ससुर का हुक्का छुड़ा दिया है। तुम क्या चीज़ हो? एक सूझवान आदमी ने समझाया कि ये सिंघ लोग तंबाकू से बहुत नफ़रत करते हैं। हुक्का लेकर तो इनके पास से भी नहीं गुज़रना चाहिए। इस मामले में वो किसी का भी लिहाज़ नहीं करते। बीबी चरनो भी सिंघों की पुत्री है तथा सिक्ख धर्म में पक्की है। बीबी चरनो के भाई ने किसी की न मानी। उसको गलतफहमी थी कि उसकी बहन उसको चूल्हे से चिलम के लिए आग लेने से मना नहीं करेगी। जब वह बीबी चरनो के घर गया तो वो घर के काम-काज में व्यस्त थी। चूल्हे में आग जल रही थी। बीबी चरनो का ध्यान अपने भाई की तरफ गया तो उसने अपने भाई के हाथ में चिलम देखकर अंदाज़ा लगा लिया कि यह आग लेने आया है। बीबी चरनो ने दूर से ही ऊंची आवाज़ में आदेश दिया कि अरे भाई! चौंके पर मत ज़ाना। उसने बीबी जी की आवाज़ को अनसुना करके चूल्हे से आग लेनी शुरू कर दी। बीबी चरनो गुस्से में आ गई। वह कमरे में से लाठी निकाल लाई। उसके भाई को अपनी सिंघणी बहन के गुस्से की समझ न थी। बीबी चरनो ने ज़ोर से लाठी मारकर उसकी चिलम चूर-चूर कर दी एवं उसे खूब पीटा। बीबी चरनो से लाठियां खाकर कमर मलता-मलता वो बाहर दौड़ गया। लोगों ने उसका खूब मज़ाक उड़ाया। इसके बाद बीबी चरनो के भाई ने अपनी भूल की क्षमा मांगी और सदा के लिए हुक्का-तंबाकू त्याग दिया।

आज हमें ज़रूरत है बीबी चरनो जी जैसी सूझवान महिलायों की, जो अपनी सूझ-समझ से नौजवानों का नशा छुड़वा सकें। सरकार द्वारा तंबाकू बेचने पर लगाई पाबंदी का ज्यादा से ज्यादा प्रचार करके लोगों को इससे अवगत कराना एवं तंबाकू के नुकसान के बारे में बताना आज समय की प्रमुख ज़रूरत है, ताकि पंजाब सारे भारत में तंबाकू-रहित क्षेत्र होने का गौरव हासिल करके दुनिया में मिसाल बन सके।

प्रकृति-प्रेमी श्री गुरु हरिराय साहिब

*-डॉ. अमृत कौर**

प्रात: काल की रमणीय वेला में श्री गुरु हरिराय साहिब बाग में सैर कर रहे थे। चारों ओर फूलों की बहार छाई थी। रंग-बिरंगे फूल मस्ती में झूम रहे थे। फूलों की भीनी-भीनी सुगंध वातावरण को मदमस्त बना रही थी। ऐसे सुहावने समय को लेकर श्री गुरु नानक देव जी द्वारा उच्चरित ये पंक्तियां दृश्य को कुछ यूं दृश्यमान कर रही थीं :

-कुदरति दिसै कुदरति सुणीऐ कुदरति भउ सुख सारु ॥
कुदरति पाताली आकासी कुदरति सरब आकारु ॥
(पन्ना ४६४)
-बलिहारी कुदरति वसिआ ॥
तेरा अंतु न जाई लखिआ ॥ (पन्ना ४६९)

प्रकृति के सभी स्वरूपों में प्रभु का निवास है। उसके विभिन्न आकर्षण-स्वरूप प्रभु की ज्योति और सुंदरता के प्रस्फुटन हैं। गुरु जी बाग की सुंदरता को देखकर चकित थे। तभी चहलकदमी करते हुए उनके चोगे से उलझकर कुछ फूल डाली से टूटकर नीचे गिर गए। फूलों को डाली से टूटा व मिट्टी में मिला देखकर चिंतन के बादल उनके चेहरे पर घिर आए। उनकी आत्मा से स्वयंमेव ये शब्द फूट पड़े-- "आह! मेरे से कितना बड़ा अनर्थ हो गया। फूलों का जीवन तो परोपकार का जीवन है। ये अपनी सुगंध और सुंदरता से वातावरण को महका रहे हैं। इनकी सुंदरता यूं मिट्टी में मिलने के लिए नहीं है। इनमें भी जीवन महक रहा है।"

गुरु जी की फूलों के प्रति यह संवेदना और प्यार हमें भाई वीर सिंघ जी की इन पंक्तियों की याद दिलाता है :

डाली नालों तोड़ ना सानूं, असां हट्ट महिक दी लाई।
लक्ख गाहक जे सुंघे आ के, खाली इक ना जाई।
तूं जे इक तोड़ के लै गिउं, इक जोगा रहि जाणा,
ओह भी पलक झलक दा मेला, रूप महिक नस जाई।

इतने में संयोगवश उनके दादा-गुरु श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब आ गए। दादा-गुरु जी ने उन्हें चिंतन में डूबा हुआ देखकर व वृत्तांत ज्ञात होने पर कहा, "जब बड़ा चोगा (उत्तरदायित्व की पोशाक) पहनी जाए तो दूसरों के अधिकारों का ध्यान भी रखा जाए। इस संसार रूपी उपवन में विचरण करते समय अपने आपको संभालकर रखना चाहिए। हमारा कर्त्तव्य संसार की सुंदरता को बढ़ाना होना चाहिए न कि कम करना।"

श्री गुरु हरिराय साहिब द्वारा खेद जताए जाने के पश्चात श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब समझ गए कि यही उनके योग्य उत्तराधिकारी हैं। इस प्रकार उन्होंने समय आने पर अपने चौदह वर्षीय पोते श्री गुरु हरिराय साहिब को गुरगद्दी सौंप दी।

**१५४, ट्रिब्यून कॉलोनी, बलटाना, जीरकपुर-१४०६०४ (पंजाब), फोन: ९८१५१-०९९५७*

श्री गुरु हरिराय साहिब ने अपने दादा-गुरु श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब के आदेश को सदैव सम्मुख रखा और अपना दायित्व बाखूबी निभाया। उनके मन में संपूर्ण मानवता के लिए प्रेम था। उनका प्रकृति-प्रेम संपूर्ण आयु बना रहा। कीरतपुर साहिब में ५२ बाग बनवाकर उसे बागों के शहर के रूप में बदल दिया, जिसमें 'नौ लक्खा बाग' अत्यंत प्रसिद्ध था। कीरतपुर साहिब के निवासी प्रो. जोगिंदर सिंघ अपनी पुस्तक 'कीरतपुर साहिब' (पृष्ठ ५४) में लिखते हैं कि "इन बागों में अनेक प्रकार के फलों के पेड़ थे, जैसे कि आम, अमरूद, संतरा, मालटा, नारंगी, नींबू, बेर, अंगूर, बादाम, खजूर, आंवला, हरड़, बिल्ल, नाशपाती आदि। आम कई किस्मों के थे।" उनका कहना है कि उन्होंने स्वयं अपनी आंखों से आम के पुराने पेड़ देखे थे, जिनमें २५० ग्राम से लेकर ८००-९०० ग्राम के आम लगते थे, जो समय के अंतराल में समाप्त हो गए। "इन बागों की देखभाल भाई भगतू जी करते थे। अनेक माली भी रखे हुए थे। अब भी कीरतपुर साहिब में अनेक बाग मौजूद हैं।"

गुरु जी का प्रकृति-प्रेम केवल फूलों, पेड़ों तक ही सीमित नहीं था बल्कि पशु-पक्षियों से भी उनका प्यार सदैव बना रहा, जिसके फलस्वरूप उन्होंने चिड़ियाघर बनवाया। शिकार खेलते समय वे पक्षियों को मारते नहीं थे, बल्कि जीवित पकड़कर चिड़ियाघर में लाकर रखते थे। अनेक पक्षियों के कलरव से चिड़ियाघर गुंजरित रहता था।

उन्होंने पशुओं को रखने के लिए रख (रखौना) बनवाई हुई थी, जहां शिकार करके लाए पशुओं को रखा जाता था। जख़्मी पशु-पक्षियों का इलाज किया जाता। पक्षी स्वतंत्रतापूर्वक उड़ते और चहचहाते। पशु खुले घूमते-विचरण करते। दूर-दूर से लोग ये कौतुक देखने आते। घोड़ों के लिए अस्तबल बनवाया।

मानवतावादी सप्तम गुरु जी ने अपना संपूर्ण जीवन लोकहिताय समर्पित कर दिया। शेख फरीद जी की ये पंक्तियां सदैव उनके जीवन का आदर्श रहीं :

इकु फिका न गालाइ सभना मै सचा धणी ॥
हिआउ न कैही ठाहि माणक सभ अमोलवे ॥
(पन्ना १३८४)

गुरु जी ने एक ऐसा बाग लगवाया, जहां विशेष रूप से औषधियों के पौधे, वृक्ष लगवाए। पर्वतों की चोटियों और जंगलों से जड़ी-बूटियों वाले पौधे-वृक्ष एकत्रित कर इस बाग को भरपूर किया। रोगियों के दुख निवारण के लिए गुरु साहिब ने कीरतपुर साहिब में एक बड़ा औषधालय खोला। यहां बीमारों का मुफ्त इलाज़ किया जाता था। उनका यह दवाख़ाना दूर-दूर तक प्रसिद्ध था। उन्होंने प्रसिद्ध वैद्य-हकीम रखे हुए थे। आप इस औषधालय में बहुत सारी बहुमूल्य दुर्लभ दवाइयां रखते थे, जिनसे रोगियों के असाध्य रोग दूर किए जाते थे। आप स्वयं प्रतिदिन औषधालय में बैठते, दवाइयां बांटते और रोगियों के दुख दूर करते। इस औषधालय में घायल और रोगी पशु-पक्षियों का भी उपचार किया जाता था।

शाहजहां के बड़े बेटे दारा शिकोह को जब औरंगजेब के द्वारा शेर की मूंछ का बाल खिला दिया गया था, तो उसे अजीर्ण रोग के लिए दवाई श्री गुरु हरिराय साहिब ने ही दी थी। दारा शिकोह ठीक होकर उनके दर्शन के लिए आया और धन्यवाद-स्वरूप लंगर के लिए जागीर देने का अनुरोध किया। गुरु जी ने जागीर लेने से इंकार कर दिया। सेवापंथियों ने गुरु जी के पद-चिन्हों पर चलते हुए गांवों,

धर्मशालाओं आदि में औषधालय कायम करने की प्रथा शुरू की। अनेक गुरुद्वारों के साथ आधुनिक युग में भी औषधालय संलग्न हैं, जहां रोगियों का मुफ्त उपचार किया जाता है।

श्री गुरु हरिराय साहिब केवल फूलों से ही प्यार नहीं करते थे, उनका अपना जीवन भी फूलों की तरह परोपकारी और सुगंध देने वाला था। 'गुर प्रताप सूरज ग्रंथ' के कर्त्ता भाई संतोख सिंघ आपकी प्रशंसा करते हुए लिखते हैं :

सति संगति सेवति निषकाम। हरि बिकार क्रोधादिक काम।

सो न सुधा मधु राय को धारति। गिआन गिरा गुर की मधुरी तर ॥

विद्वान लतीफ उन्हें शांतचित्त, संतोषी और मृदु-भाषी कहता है। ग्रीनलेस उन्हें दया की प्रतिमा कहता है। भाई नंद लाल जी उन्हें 'गुरु करता हरिराय', सत्य का पालनहार मानते हैं।

बागों की देखभाल करना और लंबी सैर करना उनके दैनिक कार्यक्रम में शामिल था। जिसने उन्हें बलिष्ट शरीर प्रदान किया। उनका शरीर अपने दादा व संत-सिपाही श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब की तरह स्वस्थ, सुडौल और बलवान था। प्रकृति-प्रेमी और कोमल हृदय का मतलब यह नहीं कि उन्होंने अपनी और सिक्खों की सैनिक सिखलाई आदि पर बल नहीं दिया। दादा-गुरु जी के हुक्मानुसार गुरु जी सुरक्षा, न्याय और शांति की स्थापना तथा दीन-दुखियों की सहायता के लिए २२०० घुड़सवार सैनिक सदैव तैयार रखते थे।

गुरु जी सिक्खों को शारीरिक रूप से बलवान बनाने के लिए जवानों की कुश्तियां करवाते; घुड़सवारी, तेग चलाने और तीरंदाज़ी का प्रशिक्षण देते। वे अपने सैनिकों को साथ लेते और क्रियात्मक रूप से सैनिक शिक्षा देने के लिए जंगलों में शिकार खेलने के लिए जाते।

श्री गुरु हरिराय साहिब का श्री गुरु नानक देव जी की इस पंक्ति में पूर्ण विश्वास था :

कुदरति खाणा पीणा पैन्हणु कुदरति सरब पिआरु ॥ *(पन्ना ४६४)*

अर्थात् प्रकृति हमारे व्यक्तित्व के निर्माण में अहम भूमिका अदा करती है और हमें खाने-पीने एवं पहनने की अनेक वस्तुएं उपलब्ध कराती है। गुरु जी के इस प्रकृति-प्रेम को चिरस्थाई बनाने के लिए उनके प्रकाश दिवस को 'पर्यावरण दिवस' के रूप में मनाया जाने लगा है। इस दिन उच्च स्तर पर वृक्षारोपण एवं पौधारोपण किया जाता है और लोगों को वातावरण को स्वच्छ रखने की प्रेरणा दी जाती है।

कविता

युगांतरी महानायक

मेरी नमस्कार, मेरी नत्मस्तना
युगांतरी महानायक, खालसा सृजनहार को!
मेरी वंदना, मेरी याचना
चरण-परसना, अमृत के दातार को !
जाति-भेद मिटावना, पांच प्यारे साजना
मेरी नमस्कार, ऐसे सृजनहार को !
जुल्मों के विरुद्ध जूझना, हक-सच को पूजना
स्वतंत्रता की स्थापना, करते हुए जप-जापना
मेरी दंडवत् वंदना, नवनिर्माण आधार को !

-डॉ. सुरिंदरपाल सिंघ, पत्तण वाली सड़क, पुराना शाला, गुरदासपुर-१४३५२१, फोन : ९४१७१-७५८४६

श्री गुरु हरिराय साहिब

*-डॉ. रछपाल सिंघ**

श्री गुरु हरिराय साहिब की महिमा अकथ्य है। सिक्ख पंथ के महान विद्वान भाई नंद लाल जी की नज़रों में श्री गुरु हरिराय साहिब अकाल पुरख के अति प्यारे महान पुरुषों से भी अधिक महान हैं। लोक-परलोक में गुरु जी का हुक्म चलता है। अकाल पुरख के भेदों का ज्ञान श्री गुरु हरिराय साहिब द्वारा ही प्राप्त हो सकता है। गुरु साहिब शरण में आने वालों की लाज रखने वाले, परदे ढकने वाले और अहंकारियों, अत्याचारियों का नाश करने वाले हैं :

हक परवर हक केश गुरू करता हरि राइ
सुलतान हम दरवेश गुरू करता हरि राइ ॥८७॥
(गंजनामा, भाई नंद लाल जी)

गुरु जी नित्तनेम में बहुत ही परिपक्व थे। वे दिन-रात, श्वास-श्वास नाम-सिमरन में अखंड जुड़े रहते थे। सवा पहर रात रहते वे स्नान करके नाम-सिमरन में लीन हो जाते थे। प्रात:काल दरबार लगाते, संगत को दर्शन देते। लंगर अटूट चलता रहता था।

छठम पातशाह श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब के पौत्र श्री गुरु हरिराय साहिब का जन्म १९ माघ, संवत १६८६ को कीरतपुर साहिब (पंजाब) में बाबा गुरदित्ता जी और माता निहाल कौर जी के पावन गृह में हुआ। श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब १६४४ ई में कीरतपुर साहिब में ज्योति-जोत समाए। ज्योति-जोत समाने से पहले उन्होंने बाबा बुड्ढा जी की अंश में से भाई भाना जी के हाथों से श्री गुरु हरिराय साहिब को गुरगद्दी की बख़्शिश की थी। गुरिआई के समय श्री गुरु हरिराय साहिब की उम्र लगभग १४ साल की थी। गुरु जी का विवाह उत्तर प्रदेश के अनूप शहर के रहने वाले भाई दया राम जी की बेटी माता किशन कौर जी के साथ हुआ। आप जी के दो सुपुत्र थे-- राम राय और श्री (गुरु) हरिक्रिशन साहिब।

श्री गुरु हरिराय साहिब ने पिता-पुरखी खालिस परंपरा के अनुसार लोगों को नाम-गुरबाणी के साथ जोड़ने का काम प्रारंभ किया। आप जी ने बहुत-से लोक-भलाई के काम भी किए। जहांगीर के राज्य-काल में बहुत-से लोग गिलटी बुखार से मर रहे थे। गुरु जी ने बेसहारा एवं गरीबों की सहायता के लिए कश्मीर घाटी में पहुंचकर और लाहौर के आस-पास भी इस भयानक बीमारी का शिकार हुए लोगों की लंगर, वस्त्र, बिस्तर, दवाइयां आदि सामान के साथ बहुप्रकारी सहायता की। गुरु जी ने रोगियों की सहायता के साथ-साथ उन्हें गुरमति का सुनहरी उपदेश भी दिया। गुरु जी की शोभा दिनो-दिन बढ़ती रही।

**पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, क्षेत्रीय खोज केंद्र, गुरदासपुर (पंजाब)-१४३५२१*

बेकसां-रा यार गुर गोबिंद सिंघ

*-डॉ. सुरिंदर कौर**

भाई साहिब भाई नंद लाल जी की यह सुंदर पंक्ति दशमेश पिता का बड़ा आकर्षक चित्र प्रस्तुत करती है। उनकी रूहानी उड़ान और स्वाभाविक छवि को इतनी सूक्ष्मता से उकेरना कदाचित ही किसी अन्य चितेरे के लिए संभव होता। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के जीवन को समझने के लिए केवल एक श्रद्धालु की ही नहीं एक प्रेमी की दृष्टि भी आवश्यक है जो किसी विरले में ही मिलती है। आम व्यक्ति तो बस *"करम नाम बरनत सुमत ॥"* जब सांसारिक दृष्टि से देखने का प्रयास करें तब भी केवल कुछ शब्दों में सब कुछ समेट लेना सरल नहीं है। अपने आगमन के बारे में गुरदेव पिता स्वयं कहते हैं :

हम इह काज जगत मो आए ॥ धरम हेत गुरदेवि पठाए ॥ (बचित्र नाटक)

इस जलते-तपते संसार को शीतल करने का मुख्य उद्देश्य लेकर ही सारे गुरु साहिबान संसार में आए और इस घोर कलयुग में बेकसों (बिसहारों, बेबसों) का सहारा बने। श्री गुरु नानक साहिब जी ने नाम जपना, किरत करना और वंड छकना के उपदेश के साथ ही अत्याचार का विरोध करने का राह भी दुनिया को दिखाया। कौम ने बड़े ही धैर्य और विवेक से इसे धारण किया। फिर समय ने सिक्ख कौम को एक ऐसे मोड़ पर ला खड़ा किया जहां स्वतंत्रता एवं अधिकारों की रक्षा करते हुए पंचम पिता को अद्वितीय शहादत देनी पड़ी। पंथ भक्ति और शक्ति के सुमेल को साथ लेकर चला। सन् १६७५ में एक बार फिर अत्याचार की अति सामने आई। औरंगज़ेब के जुल्म से डरी-सहमी हिंदू कौम अपनी रक्षा हेतु मदद की गुहार लेकर गुरु-दरबार में आई। श्री गुरु तेग बहादर साहिब ने अपने अनन्य सिक्खों के साथ लासानी बलिदान देकर हिंदू धर्म को तो बचा लिया परंतु साथ ही औरंगज़ेब तथा उस जैसे अत्याचारियों के जुल्म को मुंह-तोड़ जवाब देने का समय भी आ गया।

दशमेश पिता की खड़ग ने सिर्फ जुल्मियों का सामना करके डरी-सहमी जनता को इससे उबारा ही नहीं वरन् उन्होंने इससे एक कदम और आगे बढ़कर उसी जनता के हाथ में भी खड़ग थमाकर अत्याचार से जूझने की शक्ति प्रदान की। इन बेकसों में अमृत की आध्यात्मिक ताकत के साथ-साथ शस्त्रों की शक्ति भरकर एक ऐसी सरफरोश कौम का सृजन किया जिसने इतिहास का रुख ही मोड़ दिया। वे मज़लूम, जो सदियों से कभी जात-पात के नाम पर, कभी धार्मिक उन्माद के नाम पर तो कभी ज़मींदारी और राजसी अन्याय तले दबाये-कुचले जा रहे थे, श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के कारण स्वाभिमानी जीवन का आनंद ले सके। अहंकारियों का पतन कर आम लोगों को सरदारी सौंपने जैसा असंभव काम तो फिर कोई मरजीवड़ा संत-सिपाही ही कर सकता है। गुरदेव पिता ने केवल यह कहा ही नहीं, इसे सच भी कर

2, Banta Singh Chawl, Opp. Manish Park, Jija Mata Marg, Pump House, Andheri (E), Mumbai-400093, Mob. 8097310773

दिखाया था :

जिन की जाति और कुल मांही। सरदारी नहि भई कदाहीं। . .
इन ही को सरदार बनावों। तबै गोबिंद सिंघ नाम सदावों ॥७॥ (पंथ प्रकाश)

नौ साल की उम्र में ही जिसने अपने पिता को बेकसों के लिए न्यौछावर होते हुए देखा हो वह स्वयं कैसे उनकी आंखों में आंसू देख सकता था। गुरु साहिब ने अत्याचार का सामना करने के लिए सिक्ख-शक्ति को संगठित किया। श्री अनंदपुर साहिब में विशेष रूप से सैनिक प्रशिक्षण केंद्र खोले गए। सिक्खों के लिए हुकमनामे जारी किए गए कि वे भेंट में शस्त्र एवं घोड़े ही लेकर आएं। युद्ध संबंधी खेलों और मुकाबलों का प्रबंध किया गया। सिक्खों में जोश जागृत करने हेतु गुरु साहिब के ये यत्न सफल रहे क्योंकि दबे-कुचले लोगों को भविष्य के लिए तैयार करने का यह पहला चरण था।

गुरदेव पिता ने अपनी दूरंदेशी दृष्टि से यह भांप लिया था कि आने वाले समय में पंथ को बड़ा कठिन रास्ता तय करना है। दूसरी ओर अत्याचारी शासन भी अपनी अति पर आया हुआ था। जहां श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी को मुगल शासन के विरोध का सामना करना पड़ा वहीं हिंदू पहाड़ी राजाओं से भी जूझना पड़ा। मुगलों का विरोध तो समझ में आता है परंतु हिंदू पहाड़ी राजाओं के विरोध ने देश के नैतिक पतन के बड़े ही घिनौने रूप को उजागर किया। जिस गुरु ने उनके धर्म की रक्षा के लिए सहर्ष अपने पिता को न्यौछावर कर दिया आज ये एहसान-फरामोश उसी गुरु के शत्रु बन बैठे। इन्हीं शक्तियों ने मिलकर भंगाणी में कलगीधर पिता तथा उनके सिक्खों पर आक्रमण किया, जिसमें उन्हें हार ही हाथ लगी।

जहां मुगलों और हिंदू पहाड़ी राजाओं का संघर्ष अपनी राज्य-सत्ता को लेकर था वहीं गुरदेव पिता के यत्न जनता को सत्ता के अन्याय से बचाने के लिए थे। जहां सत्ताधारी शस्त्रों के आतंक तले लोगों पर अपना धर्म थोप रहे थे वहीं कलगीधर पिता शस्त्रों को मज़लूमों की ढाल बनाकर उन्हें धर्म के प्रति स्वतंत्र विचार रखने का अधिकार दे रहे थे। कई नासमझ इतिहासकार व विद्वानों ने औरंगज़ेब एवं पहाड़ी राजाओं के इस खूनी खेल को दरकिनार कर श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी को शस्त्र उठाकर अलगाववादी कौम खड़ी करने का उत्तरदायी ठहराया है। धर्मांधता का चश्मा पहनकर कलम हाथ में उठाने वाले ऐसे तथाकथित लेखक देख ही नहीं पा रहे हैं कि एक पक्ष के हाथों में तलवार थी जो निर्बलों पर वार कर रही थी और दूसरे पक्ष के हाथों में कृपाण थी जो निर्बलों को बचाने का काम कर रही थी। दोनों पक्षों के ध्येय में ज़मीन-आसमान का अंतर था। पहला पक्ष अत्याचार करने के लिए शस्त्र उठाए हुए था जबकि गुरु साहिब व उनके सिक्खों ने अत्याचार मिटाने हेतु स्वाभिमानी, सदाचारी और शांत समाज की स्थापना के लिए शस्त्र उठाए थे। गुरु साहिब ने 'ज़फरनामा' में इस बात को स्पष्ट करते हुए कहा है कि जब धर्म की रक्षा और शांति की बहाली के सारे मार्ग बंद हो जाएं तब कृपाण उठाना सही ही नहीं, धर्म भी है :

चु कार अज़ हमह हीलते दर गुज़शत ॥
हलालस्सत बुरदन ब शमशीर दसत ॥२२॥
(ज़फरनामा)

इसी दायित्व को निभाते हुए भंगाणी के युद्ध के बाद गुरु-घर के विरोधियों व सिक्खों में कई बार टकराव हुआ जिसमें नदौण का युद्ध

तथा हुसैनी युद्ध प्रमुख हैं। गुरु साहिब ने जान लिया था कि अब पंथ को एक नया निखार, एक नई पहचान देने का समय आ गया है। उन्होंने सन् १६९९ वाली वैसाखी के अवसर पर सभी सिक्खों को श्री अनंदपुर साहिब पहुंचने के हुकमनामे जारी किए। इतिहास के अनुसार उस अवसर पर ८०००० सिक्ख एकत्रित हुए थे। कलगीधर पिता ने नंगी कृपाण हाथ में लेकर पांच बार पांच सिक्खों के सिर की मांग की और पांचों बार पांच सरफरोश मरजीवड़ों ने अपने शीश गुरु-चरणों पर अर्पित कर खालसे की नींव रखी। खंडे बाटे की पाहुल छकने के बाद उनके नाम-- भाई दया सिंघ जी, भाई धरम सिंघ जी, भाई मोहकम सिंघ जी, भाई साहिब सिंघ जी, भाई हिंमत सिंघ जी पड़ गये। इनके बाद गुरु साहिब जी ने स्वयं अमृत-पान किया और अपना नाम 'गोबिंद राय' से बदलकर 'गोबिंद सिंघ' रख लिया। गुरु साहिब का स्वयं अमृत-पान करके सिंघ सजना एक ऐसा कदम था जिसने कौम में अमृत-पान की अनिवार्यता पर मुहर लगा दी। यदि गुरु साहिब ने सिंघ कहलाने के लिए अमृत-पान करना आवश्यक जाना तो हम सभी के लिए भी यह आवश्यक है।

बेकसों को सहारा देने की बात करने वाले तो संसार में बहुत सुने हैं परंतु हाथ देकर उन्हें ऊंचा उठाने वाला, समानता का अधिकार दे कर सीने से लगाने वाला निडर सूरमा इतिहास ने पहली बार देखा था। इस समागम में गुरु साहिब ने एलान किया कि आज से सिक्ख अमृत-पान कर खालसे में परिवर्तित होंगे, जिसका अर्थ है-- शुद्ध अथवा पवित्र। खालसा एक अकाल पुरख का पुजारी होगा। खालसे में जात-पात के भिन्न-भेद का कोई स्थान नहीं होगा। खालसा हिंदू, मुसलमान व अन्य किसी धर्म की जीवन-शैली को नहीं अपनाएगा परंतु उनका अनादर भी नहीं करेगा। खालसा गुरु साहिबान द्वारा निश्चित की गई जीवन-शैली (रहित मर्यादा) का पालन करेगा। गुरबाणी खालसे का सर्वोच्च आधार है और सदा रहेगी। खालसे में प्रवेश के बाद सिक्ख का कुलनाश, कृतनाश, धर्मनाश व कर्मनाश हो जाएगा और गुरु-घर में उसका दूसरा जन्म होगा। खालसा मज़लूम का सहायक और अत्याचार का विरोधी होगा। उस दिन सैकड़ों की तादाद में सिक्ख सिंघ सजे।

खालसे के सृजन का बड़ा ही आश्चर्यजनक प्रभाव पड़ा। मुरझाई कौम में एक नया जोश आ गया। जब सारे भिन्न-भेद, दिखावे मिट जाएं व समूचा समाज एक इष्ट की आराधना करता हुआ एक ही लक्ष्य की प्राप्ति के लिए, एक ही राह पर चल पड़े, तब वह एक सैलाब की तरह होता है जिसे रोक पाना समय के हर अत्याचारी के लिए कठिन है। बेकसों के इस यार ने आम जनमानस में से भय समाप्त कर न केवल उनके सुप्त स्वाभिमान को ही जागृत किया वरन् अत्याचार के विरुद्ध एक निडर व शस्त्रधारी कौम खड़ी कर दी। स्पष्ट है कि हिंदू पहाड़ी राजा एवं मुगल खालसे से घबरा गए थे और सत्य की इस शक्ति को रोकने के लिए उनकी 'पाप की इस जंञ' (बारात) ने सन् १७०४ में श्री अनंदपुर साहिब पर आक्रमण कर दिया।

यह गुरु साहिब जी के जीवन का ऐसा मोड़ या पड़ाव था जिसमें न केवल हज़ारों की गिनती में सिंघ शहीद हुए बल्कि गुरु-परिवार भी बिखर गया। बड़े साहिबज़ादे चमकौर के युद्ध में शत्रुओं से लड़ते हुए शहीद हो गए और माता गुजरी जी व छोटे साहिबज़ादों को वज़ीर ख़ान ने सरहिंद में बड़ी निर्दयता से शहीद कर दिया। कादर के इस हरकारे ने सदा अपनी आत्मा की

आवाज़ को ही सुना, कोई पराया न जाना और धर्म व धर्मियों के पक्ष में, गलत और अन्याय का विरोध करते हुए अपना सब कुछ न्यौछावर कर देने में भी संकोच नहीं किया।

स्पष्ट है कि संसार में रहते हुए कलगीधर पिता ने जो आलौकिक कार्य किए वे (केवल ४२ वर्षों के जीवन में) कदाचित ही दुनिया में किसी और के लिए कर सकना संभव होता। उनका व्यक्तित्व सभी गुणों के चरम का एकीकरण था। कोमल ऐसे कि किसी मज़लूम की एक छोटी-सी आह भी नज़रंदाज़ नहीं कर सके और कठोर ऐसे कि जो भी अत्याचारी खड़ग के सामने आ जाता, नाश हो जाता। भाई गुरदास सिंघ जी फ़रमान करते हैं :

गहि ऐसे खड़ग दिखाईऐ को सकै न झेला।
(वार ४१:१५)

जब नंगी कृपाण हाथ में लेकर सिक्खों के सिरों की मांग की तो कोई मना नहीं कर सका। फिर स्वयं ही सिक्ख बनकर अपने सजाए हुए सिक्खों से अमृत-पान करते हुए कहते हैं :

सेव करी इनही की भावत अउर सेव सुहात न जी को ॥
दान दयो इन ही को भलो अरु आन को दान न लागत नीको ॥
आगै फलै इन ही को दयो जग मै जसु अउर दयो सभ फीको ॥
मो ग्रह मैं तन ते मन ते सिर लउ धन है सभ नही इनही के ॥ *(दसम ग्रंथ)*

धैर्यवान ऐसे कि अपने जिगर के चार टुकड़ों के शहीद हो जाने पर भी अकाल पुरख वाहिगुरु का धन्यवाद करते हैं। जब मोह करते हैं तो ऐसा कि स्वयं अपने खालसे में समा जाने की बात करते हैं :

खालसा मेरो रूप है खास। खालसे महि हौ करों निवास।

ऐसे महान गुरुदेव के लिए जितनी भी उपमाएं दें, कम पड़ जाती हैं। यही कारण है कि लाला दौलत राय ने सारी उपमाओं को एक ही शब्द में समेट दिया-- 'साहिबे-कमाल।' क्या कमाल की उपमा है! श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी सच्चे अर्थों में एक युगपुरुष थे जिन्होंने न केवल अपने समय को समझा परंतु आने वाले भविष्य की भी नब्ज़ पहचान ली थी। बेकसों का यह यार भविष्य में भी लोगों को धार्मिक छल और अन्याय से बचाने के लिए गुरुता-गद्दी सदा-सदा के लिए श्री गुरु ग्रंथ साहिब को सौंपकर ज्योति-जोति समा गया। क्या कह सकते हैं उनके लिए इसके सिवा :

हक्क हक्क आगाह गुर गोबिंद सिंघ
शाहि शाहनशाह गुर गोबिंद सिंघ ॥
कादिरि हर कार गुर गोबिंद सिंघ
बेकसां-रा यार गुर गोबिंद सिंघ ॥

अध्यात्म का उत्कर्ष श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी

*-डॉ. सत्येंद्रपाल सिंघ**

दशम पातशाह के रूप में गुरगद्दी पर आसीन होने वाले श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का व्यक्तित्व पूर्ववर्ती गुरु साहिबान के समान ही संपूर्ण और समन्वित था जिससे महानता की एक अभूतपूर्व और गौरवमयी परिभाषा लिखी जा सकी और आत्मिक श्रेष्ठता को मन के अनछुए कोनों में महसूस करके लोग विस्माद से भर उठे थे। दसवें पातशाह ने कुछ ऐसे रंगों से भी संसार को सरशार किया जिनसे संसार अब तक अपरिचित था और इसका दायित्व परमात्मा ने कदाचित श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी को ही सौंपा था। सूर्य का प्रकाश सात रंगों से मिलकर बना होता है किंतु सदा उजला रंग ही प्रकट होता है। किन्हीं खास अवसरों पर भले ही सतरंगी इंद्रधनुष बनता है किंतु सूर्य की पहचान सदा उसके प्रकाश से ही होती है। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का आगमन आध्यात्मिक जगत में पहली बार इंद्रधनुष के उगने जैसा था जिसने पूरे संसार को प्रकाशित कर दिया। दरअसल प्रकाश था श्री गुरु नानक साहिब का अज्ञानता के अंधेरे में भटकी मानवता को सच के सुयोग से परमात्मा को पाने का मार्ग दिखाना। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने इसी प्रकाश को जन-जन तक ले जाने का कार्य उसी मिशन के तहत किया जो श्री गुरु नानक साहिब ने आरंभ किया था। विचार और आचार दोनों ही स्तरों पर उनमें उसी श्रेष्ठता और उच्चता के दर्शन होते हैं जो श्री गुरु नानक साहिब में थी। उनके योद्धा और रणनीतिकार स्वरूप उनके सिपाही स्वरूप के पूरक बनते दिखते हैं, जबकि उनका भक्ति और बलिदान का स्वरूप ऐसा था जिससे उनका संत स्वरूप मुखर हो उठता है। गुरु साहिब ने स्वयं इस बात को अपने निम्न वचन में स्पष्ट किया है :

आतमा प्रधान जाह सिद्धता सरूप ताह बुद्धता बिभूत जाह सिद्धता सुभाउ है ॥
राग भी न रंग ताहि रूप भी रेख जाहि अंग भी सुरंग ताहि रंग के सुभाउ है ॥

(गिआन प्रबोध)

गुरु साहिब ने माना कि आत्मिक पवित्रता से ही जीवन में विकारों, दुखों से मुक्ति पाकर परमात्मा को पाया जा सकता है और परमात्मा को अंगीकार करके जीवन सफल हो जाता है। परमात्मा निराकार है। उसके रंग में रंगकर ही उसे पाया जा सकता है। लोग भ्रम और दुविधा में पड़कर सच को देख नहीं पा रहे थे। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का लक्ष्य था :

जाहि तहां तै धरम चलाइ ॥
कबुधि करन ते लोक हटाइ ॥२९॥६॥

(बचित्र नाटक)

अर्थात् लोगों में ज्ञान का प्रकाश भरकर उन्हें अपकर्म करने से रोकना।

गुरु साहिब का जन्म पटना साहिब में हुआ था और पांच वर्ष तक वे वहीं रहे। एक बार एक श्रद्धालु ने उन्हें सोने के कड़े भेंट किए जो उन्हें पहनाये गए। गुरु साहिब ने गंगा नदी के किनारे खेलते हुए एक कड़ा उतारकर

**ई-१७१६, राजाजी पुरम, लखनऊ-२२६०१७, फोन: ९४१५९-६०५३३*

नदी में फेंक दिया। जब उनके मामा किरपाल जी ने (जो पटना साहिब में ही परिवार के साथ रहकर परिवार की देखभाल कर रहे थे क्योंकि श्री गुरु तेग बहादर साहिब धर्म प्रचार-यात्रा पर ढाका और असम की ओर चले गये थे) कड़ा कहां फेंकने के बारे में पूछा तो गुरु साहिब ने दूसरा कड़ा भी उतारकर नदी में फेंक दिया और कहा कि वहां फेंका था। यह मानवता को मोह-माया से विरत और निर्लिप्त रहने का अनूठा संदेश था जो गुरु साहिब ने स्वयं अपने आचरण से दिया। उनकी यह निर्लिप्ता ईश्वर-प्रदत्त थी।

जब पीर भीखण शाह ने अपनी आत्मिक शक्ति से गुरु साहिब के पटना साहिब में जन्म लेने के बारे में जान लिया तो वे करनाल से पटना साहिब उनके दर्शन के लिए गए। वहां उन्होंने (बाल) श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के दर्शन की इच्छा प्रकट की। उनकी श्रद्धा को देखकर उनको गुरु साहिब के दर्शन कराए गए पीर भीखण शाह ने उनके आगे दूध के दो बर्तन रखे गुरु साहिब ने दोनों पर हाथ रख दिया। पीर भीखण शाह ने निष्कर्ष निकाला कि गुरु साहिब बिना किसी भेदभाव के सभी का कल्याण करेंगे। यह सत्य सिद्ध हुआ। निर्लिप्तता को समदृष्टि से जोड़कर ही श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने मानवता का नया इतिहास रचा :

जो प्रभ जगति कहा सो कहिहों ॥
म्रित लोक ते मोन न रहिहों ॥ (बचित्र नाटक)

गुरु साहिब ने स्वयं कहा कि वे संसार को परमात्मा का संदेश देने आए हैं और वही करने आये हैं जो परमात्मा का कार्य है। इससे वे कभी पीछे नहीं हटेंगे। उनकी राह पारब्रह्म की राह थी। उन्होंने संस्कृत, हिंदी, पंजाबी, अरबी, फारसी की शिक्षा ली और युद्ध-कला में भी प्रवीण हुए। वे विद्वानों, कवियों के निकट संपर्क में रहे जिससे उनकी श्रेष्ठ साहित्यिक अभिरुचियों का प्रकटीकरण हुआ। आगे चलकर गुरगद्दी पर आसीन होने के बाद गुरु साहिब ने सत् साहित्य की महत्ता से संसार का परिचय कराते हुए देश के कोने-कोने से कवियों को आमंत्रित किया और उन्हें अपने दरबार में आश्रय दिया। इतिहासकारों के अनुसार उनके दरबार में कवियों की संख्या बावन थी। अन्य अनुमान के अनुसार कवियों की संख्या सौ तक थी तथा इसके अतिरिक्त पच्चीस ऐसे विद्वान भी थे जो गद्यकार थे। इन कवियों में एक कवि पंडित जगन्नाथ भी थे जो पहले मुगल शासक शाहजहां के दरबार में रहकर शृंगार रस की कवितायें रचा करते थे। गुरु साहिब के दरबार में आने के बाद उनकी भावनायें शुद्ध हो गईं और उन्होंने 'आध्यात्मिक प्रकाश' नामक ग्रंथ लिखा तथा अपने पूर्व लेखन से तौबा कर ली। यह गुरु साहिब के सान्निध्य का ही परिणाम था :

तवक्क नाम रत्तियं ॥
न आन मान मत्तियं ॥
परम्म धिआन धारीयं ॥
अनंत पाप टारीयं ॥ (बचित्र नाटक)

गुरु साहिब ने कवि जगन्नाथ को परमात्मा के साथ ऐसा जोड़ा कि वे विषय-विकारों से मुक्त हो गए। गुरु साहिब को संस्कृत में रचे गये धार्मिक ग्रंथों की महत्ता का ज्ञान था, इसीलिए उन्होंने एक दर्जन से अधिक सिक्खों को चुनकर वाराणसी संस्कृत भाषा के अध्ययन के लिए भेजा ताकि अध्यात्म का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सके। दस वर्ष बाद जब वे लोग प्रकांड विद्वान बनकर लौटे तो गुरु साहिब ने इनकी सेवाएं धर्म के प्रचार और प्रसार के लिए लीं।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की साहित्य-

अध्ययन और बाणी-रचना में इतनी गहन रुचि का कारण उनका स्वयं महान विद्वान होना था। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने विभिन्न भाषाओं में बाणी की रचना की जो बाकमाल है तथा इस बात को सिद्ध करती है कि वे केवल तेग के ही नहीं कलम के भी धनी थे और हर भाषा में सिद्धहस्त थे। गुरु जी के दरबारी कवि भाई नंद लाल जी ने अपना एक ग्रंथ गुरु साहिब के समक्ष प्रस्तुत किया जिसका नाम 'बंदगीनामा' था। गुरु साहिब ने इसका नाम बदलकर 'ज़िंदगीनामा' कर दिया। यह उनकी आत्मिक श्रेष्ठता का एक बड़ा उदाहरण था। गुरु साहिब ने 'ज़िंदगीनामा' की बात कह उस नश्वर जीवन को कभी व्यर्थ न जाने देने का संदेश दिया जो परमार्थ के लिए, परमात्मा को पाने के लिए प्राप्त हुआ है।

सच की राह कठिनाइयों से भरी है। इसकी घोषणा श्री गुरु नानक साहिब ने ही कर दी थी और कहा था कि जो अपने जीवन को बेहिचक कुर्बान करने के लिए तैयार हो वही इस मार्ग पर चलने के योग्य है। पूर्व गुरु साहिबान को जिन राजसी विरोधों और अत्याचारों का सामना करना पड़ा था उनसे निपटने और उन्हें मात देकर सत्य की सर्वोच्चता को स्थापित करने के लिए एक बड़े कदम की आवश्यकता थी। श्री गुरु तेग बहादर साहिब के बलिदान ने उस कदम को परिपक्व कर दिया था। सत्य को नया चेहरा, नई चमक प्रदान करने के लिए श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने खालसा पंथ की साजना की। इसके लिए उन्होंने अद्‌भुत विधि अपनाई अमृत-पान करने की। गुरु साहिब ने अमृत तैयार कर इसे सामान्य लोगों की आत्मिक शक्ति का आधार बना दिया। इसे तैयार करने के लिए गुरु साहिब ने लोहे के एक बाटे में जल लिया। इस जल में बताशे डाले गये और खंडे से उस जल को चलाते हुए गुरबाणी का जाप किया। इस तरह अमृत तैयार करके गुरु साहिब ने 'पांच प्यारों' को छकाया और उन्हें 'खालसा' की संज्ञा दी। अमृत बनाने में प्रयुक्त हुआ लोहे का बाटा इस बात का प्रतीक था कि मन इसी बर्तन की तरह खुला हुआ हो, जिसका बड़ा आधार हो, ताकि उसमें परमात्मा का भाव पूर्ण रूप से समा सके और स्थिर रह सके। मन में वैसे ही भावों को स्थान मिले जो जल जैसे निर्मल हों और उस निर्मलता में परमात्मा के प्रति समर्पण समाया हो। जीवन में वैसी ही आनंद की अनुभूति हो जैसी बताशों की मिठास घुलने से प्राप्त होती है। अमृत-पान करके 'खालसा' बनने का अर्थ था जीवन को निर्मल, मधुर और परमात्मा के प्रेम में रंग देना। 'खालसा' का अर्थ था पारब्रह्म से मिलने की तैयारी न कि किसी विशेष फौज का निर्माण। यह सोचा भी कैसे जा सकता है कि जो गुरु साहिब परमात्मा के आदेश पर श्री गुरु नानक साहिब के मिशन को आगे ले चलने के लिए धरती पर आए उनका उद्देश्य किसी सेना के निर्माण या शस्त्रों का भंडारन करने से पूरा हुआ होगा। गुरु साहिब का भरोसा तो सदा परमात्मा पर टिका था। उन्हें तो शस्त्रों में से भी परमात्मा के ही दर्शन होते थे :

काम न क्रोध न लोभ न मोह न रोग न सोग न भोग न भै है ॥
देह बिहीन सनेह सभो तन नेह बिरकत अगेह अछै है ॥
जान को देत अजान को देत जमीन को देत जमान को दै है ॥
काहे को डोलत है तुमरी सुध सुंदर स्री पदमा पति लैहै ॥ *(अकाल उसतत)*

गुरु साहिब ने पारब्रह्म पर अडोल विश्वास

रखने और आशा को बनाये रखने का संदेश दिया। इस परिप्रेक्ष्य में गुरु साहिब ने पूरे परिवार के बलिदान के बाद भी स्वयं को परमेश्वर का आभारी और संगी मानते हुए आत्मिक श्रेष्ठता के शिखर को छू लिया :

न साज़ो न बाज़ो न फौजो न फ़रश ॥
ख़ुदावंद बख़शिंदहहि ऐशि अरश ॥४॥ (ज़फ़रनामा)

'ज़फ़रनामा' गुरु साहिब की महानतम बाणी है जिसमें गुरु साहिब की आत्मा एक-एक शब्द में झलकती है। यह ऐसे समय रची गयी थी जब गुरु साहिब परमात्मा द्वारा सौंपे गये कार्य का एक बड़ा अंश संपन्न कर चुके थे। यह कार्य उन्होंने सिक्खों को शिक्षित कर, परमात्मा से जोड़कर, उन्हें खालसा के रूप में आत्मिक शुद्धता प्रदान करके, सत्य के लिए वीरतापूर्वक दृढ़ रहने का ढंग बताकर और सत्य के लिए सर्वस्व अर्पण कर देने का विस्मित कर देने वाला आदर्श स्थापित करके किया था, जिससे अन्याय का सिर शर्म से झुक गया था। 'ज़फ़रनामा' में गुरु साहिब के उपरोक्त वचन मन को अज्ञानता और भ्रम के बंधनों से मुक्त करके उस द्वार पर ला खड़ा करते हैं जहां प्रकाश ही प्रकाश है और आनंद ही आनंद है। माछीवाड़े के जंगल में सब कुछ खोकर कूएं के रहंट के पात्र को सिरहाना बनाकर रात गुज़ारने के बाद भी परमात्मा की कृपा से आनंद की बात करना गुरु जी की रूहानियत का शिखर थी। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी परमात्मा का ही स्वरूप थे और उनमें परमात्मा ने स्वयं साक्षात प्रकट होकर मानवता को प्रश्रय दिया।

इसी रूहानियत के आनंद में रमे हुए गुरु साहिब ने नांदेड़ साहिब में श्री गुरु ग्रंथ साहिब को गुरगद्दी सौंपकर खालसा को सदआनंद की अवस्था प्रदान कर दी जो एक अभूतपूर्व घटना थी। वे खालसा को कभी न छूटने वाला पल्ला पकड़ा गए और निहाल कर गये। उनको तो हर जगह परमात्मा ही नज़र आया तभी तो वे फरमान कर गए :

तुहीं तुहीं ॥ तुहीं तुहीं ॥
तुहीं तुहीं ॥ तुहीं तुहीं ॥ (अकाल उसतत)

उपहार ऐसा जो जीवन भर याद रहे

यह बात हर एक आम व खास व्यक्ति के मन को कचोटती रहती है कि वो अपने मित्रों, सम्बंधियों को यदि उपहार दे तो क्या दे? किसी के जन्म-दिन आदि या किसी विशेष दिवस पर किसी को कुछ भेंट किया जाए तो ऐसा उपहार हो जिसे स्वीकार करने वाला जिंदगी भर याद रखे। इसके लिए अब ज्यादा सोचने और चिंता की जरूरत नहीं है। जीवन भर का उपहार है 'गुरमति ज्ञान'। उपहार भी ऐसा कि जब हर माह मित्र आदि के घर पर जाकर डाकिया 'गुरमति ज्ञान' की प्रति थमाएगा तो आपका मित्र हर माह आपका शुक्रिया करता नहीं थकेगा। आप अपने मित्र या किसी सम्बंधी को केवल १००/- रुपये में उपहारस्वरूप 'गुरमति ज्ञान' का आजीवन सदस्य बना दीजिए और हासिल कीजिए अपने मित्र की जीवन भर की खुशियां। यह सौदा बेहद सस्ता एवं लाभकारी रहेगा। आज ही मनीआर्डर या बैंकड्राफ्ट के जरिए चंदा भेजकर अपने मित्र या सम्बंधी को 'गुरमति ज्ञान' का आजीवन सदस्य बनाकर उसे इस बहुमूल्य 'उपहार' से निवाजें। *-संपादक।*

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का व्यक्तित्व

*-स. गुरदीप सिंघ**

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी महान नीतिवेत्ता, उच्च कोटि के शायर, महान त्यागी, कुशल प्रशासक, प्रसिद्ध विद्वान, क्रांतिकारी योद्धा, दुखी लोगों के हमदर्द, ज़ालिम को ललकारने वाले, प्रभु-भक्त, धर्म-सुधारक, समाज-सुधारक, मार्ग-दर्शक, कुशल सिपहसलार थे। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के जीवन में घटित हुई हर घटना अद्‌भुत है। उनके व्यक्तित्व की उपमा, प्रशंसा, महानता का जितना बखान किया जाए कम है।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने अपने धैर्य, सहनशीलता एवं प्रभु की रज़ा में राज़ी रहने का जो उदाहरण पेश किया वो वाकई आश्चर्य करने वाला है। अपने बाल्यकाल के वर्षों में दीन-दुखियों के प्रति हमदर्दी जताते हुए उनके धर्म की रक्षा करने के लिए पिता-गुरु श्री गुरु तेग बहादर साहिब को सहमति देना जाहिर करता है कि वे बाल्यकाल से ही बुलंद हौसले और दृढ़ इरादे वाले थे। पिता-गुरु के शहीद हो जाने के बाद उन्होंने जिस उद्देश्य की कल्पना की थी, उसे पूरा किया। कोई भी मुसीबत, दुख उनकी सोच-शक्ति पर हावी न हो पाया। यह जानते हुए भी कि जंग में शहीद हो जाना है, अपने दोनों बड़े साहिबज़ादों को आशीर्वाद दे उनके हौसले बुलंद करते हुए मैदाने-जंग में भेजना मामूली घटना नहीं है। छोटे साहिबज़ादों की शहीदी की दासतां सुनकर भी अडोल और शांत रहना, प्रभु के हुक्म को सहर्ष स्वीकार कर लेना बड़े धैर्य और हिम्मत की बात थी।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी महान क्रांतिकारी महापुरुष थे। उन्होंने जो कुछ भी किया जुल्म के राज्य को खत्म करने के लिए किया। उन्होंने निर्बलों को शक्ति दी और अत्याचार के विरुद्ध आवाज़ उठाई। उन्होंने दबे-कुचले लोगों की सोच को बदलकर क्रांति पैदा की। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी सच्चे बलिदानी और निष्काम देश-भक्त थे। असल बलिदानी वही होता है जो जनता के हित में अपने प्राणों की आहुति दे दे। उनके पास जो कुछ भी था, देश-कौम के लिए अर्पित कर दिया और सरबंसदानी कहलाए। अपने चारों साहिबज़ादों का बलिदान दिया; पांच प्यारों को देश-कौम के लिए कुर्बान किया। उन्होंने बाणी-रचना से भी कौम को नया जीवन प्रदान किया। इतने बड़े त्याग, वो भी देश-कौम के लिए निष्काम होकर किए। उनके त्याग की भावना, उनके बाल्यकाल की एक घटना से ही प्रकट हो जाती है। अपने साथियों के साथ खेलते हुए जब उनका सोने का कड़ा नदी में गिर गया तो गिरे हुए कड़े की जगह बताने के लिए उन्होंने दूसरा कड़ा भी उसी स्थान पर फेंक दिया। यह उनके सांसारिक पदार्थों के त्याग की भावना थी।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी स्वयं विद्वान थे और विद्वानों की कद्र भी करते थे। वे कवियों का सम्मान भी किया करते थे। उनके दरबार में ५२ कवि थे। गुरु जी ने पुरातन धार्मिक ग्रंथों का अध्ययन किया हुआ था। अरबी और

**३०२, किदवाई नगर, लुधियाना-१४१००८; फोन: ९८८८१२६६९०*

फारसी भाषा के आप माहिर थे। बाल्यकाल में ही गुरु जी ने अस्त्रों-शस्त्रों का अच्छा अभ्यास कर लिया था। आपकी तीरंदाज़ी बेमिसाल थी। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की निडरता, वीरता और दृढ़ इरादों ने संसार के इतिहास को बदलकर रख दिया। गुरु जी ऐसे महाबली थे कि केवल चालीस सिंघों के साथ शाही फौज के घेरे के अंदर होते हुए भी मैदान-ए-जंग में डटे रहे।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी समय की हकूमत के आगे कभी नहीं झुके। उन्होंने औरंगज़ेब को पत्र लिखकर बहुत ही स्पष्ट शब्दों में उसके जब्र-जुल्म का पर्दाफाश किया। उसको चेतावनी दी कि उसको अपनी काली करतूतों का लेखा-जोखा देना होगा। खुदा की दरगाह में कोई भी चालाकी या मक्कारी नहीं चलती।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी अपने सिक्खों को अपने साहिबज़ादों के समान ही प्यार करते थे और सबके साथ एक जैसा व्यवहार करते थे। उनकी नज़र में सब बराबर थे। गुरु जी मिष्ठभाषी स्वभाव के मालिक थे। गुरु जी के सिक्ख उनके हुक्म का पालन करने के लिए अपना जीवन न्यौछावर करने को भी तैयार रहते थे। गुरु जी का जीवन सरल और सीधा था। समूची मानवता से गुरु जी प्रेम करते थे। उनके जीवन-उद्देश्यों का सार प्रेम ही था। गुरु जी ने फरमान किया है :

साचु कहों सुन लेहु सभै जिन प्रेम कीओ तिन ही प्रभ पाइओ ॥ (त्व प्रसादि सवय्ये)

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के बारे में लाला दौलत राय पुस्तक 'साहिबे-कमाल' में लिखते हैं-- "गुरु जी ने उन मनुष्यों की काया पलट दी जिन्होंने इसलाम की गुलामी के अधीन अनगिनत दुख-यातनाएं सहन की और अपनी पत्नियों, बहू-बेटियों को टके-टके में बिकता देखकर भी चुप बैठे रहे। वे अपनी जायदाद और अन्य माल-असबाब भी खो बैठे।... उनके बुझे हुए दिलों और हौसलों में गुरु जी ने ऐसा जोश भरा कि वे सब देश-प्यार और कौम की खातिर, धर्म के लिए शहीदी-जाम पीने को तैयार हो गए। गुरु जी ने बिल्लियों (भाव डरपोक) को शेर बनाया और नामर्दों को मरदि-मैदानि। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी इसलाम धर्म के विरोधी न थे। वे उनके विरोधी थे जो मजहब की आड़ में जब्र-जुल्म कर रहे थे, जो स्वयं इसलाम को ही कलंकित कर रहे थे, इसलाम धर्म के प्रचार के लिए हर धर्म की तौहीन कर रहे थे; हर किसी व्यक्ति को मारना और लूटना पवित्र काम समझते थे।"

(पृष्ठ ६७)

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के कारनामों को ध्यान से देखा जाए तो पता चलता है कि उन्होंने बेजान लोगों में जान फूंकी, उन्हें निर्भयता और वीरता दी, मानवीय गुणों को प्रबलता प्रदान की, प्रेम तथा एकता का संदेश दिया। हर समय चढ़दी कला में रहने वाले गुरु जी ने मानवता को मुक्ति के मार्ग की दात बख़्शी। रूहानियत की रोशनी और अमृत की दात से सिक्ख कौम को संसार की अग्रणी कौम में खड़ा कर दिया। ☸

बाबा दीप सिंघ जी शहीद

*-डॉ. कशमीर सिंघ 'नूर'**

विश्व-इतिहास में अलग, उच्च कोटि का और अति महत्त्वपूर्ण व गौरवपूर्ण स्थान रखने वाले सिक्ख-इतिहास का प्रत्येक अध्याय शहीदों के खून की आभा से चमकता-दमकता दिखाई देता है। सिक्ख गुरुओं, शूरवीरों, योद्धाओं, सिंघों, सिंघनियों, भुजंगियों की शहादत की लौ से, प्रकाश से संसार में से तमाम बुराइयों के साये व अंधेरे मिटे हैं, खत्म हुए हैं। हमारे शहीदों ने रूहानियत की खुशबू फैलाकर हम सभी प्राणियों की रूहों को महकाया है।

शहादत के रौशन-चिराग, दीप, शस्त्र और शास्त्रों के धनी, शूरवीर योद्धा, शहादत की बुलंद मिसाल कायम करने वाले तथा 'शहीद मिसल' के जत्थेदार बाबा दीप सिंघ जी शहीद का जन्म माघ १४, सं. १७३९ को पिता श्री भगता जी तथा माता श्री जीऊणी जी के गृह श्री अमृतसर के गांव पहूविंड में हुआ। बचपन से ही बाबा जी सुडौल, सुंदर, ऊंचे कद के एवं स्वस्थ थे। बड़े होने पर वे श्री अनंदपुर साहिब चले गए। वहां दशमेश पिता श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की सेवा में रहने लगे। उन्हें दशम पिता जी के हाथों अमृत-पान करने का परम सौभाग्य प्राप्त हुआ। उनकी मनोवृत्ति आध्यात्मिक थी। उन्हें गुरु जी ने गुरबाणी-अध्ययन की शिक्षा दी और साथ में शस्त्र-संचालन में भी प्रवीण किया। गुरु जी की कृपा से बाबा जी युद्ध-कला में निपुण होकर वीर योद्धा बने। उन्होंने श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी द्वारा लड़े गए युद्धों में अपनी युद्ध-कला का बाखूबी प्रदर्शन किया। इससे बड़े-बड़े विरोधी योद्धा उनसे भय खाने लगे। उनका नाम सुनकर ही विरोधियों के हृदय कांपने लगते थे।

बाबा दीप सिंघ जी उच्च कोटि के विद्वान व गुणवान व्यक्ति थे। अपने रहबर, अपने गुरु जी का आदेश पाकर उन्होंने तलवंडी साबो श्री दमदमा साहिब में सिक्खी का प्रचार एवं प्रसार करना शुरू किया। तलवंडी साबो में रहते हुए उन्होंने भाई मनी सिंघ जी के साथ मिलकर श्री गुरु ग्रंथ साहिब की कई प्रतियां तैयार कीं।

जब श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी दक्षिण की ओर गए तब गुरु जी बाबा दीप सिंघ जी को श्री दमदमा साहिब की सेवा का कार्य सौंप गए। सन् १७६० ई. तक बाबा जी यहीं पर रहे और सिक्खी का प्रचार करते रहे।

अहमद शाह अब्दाली ने भारतवर्ष पर अनेक बार आक्रमण किया। हर बार उसका रास्ता रोकने वाले, उसकी सेना का व्यापक नुकसान करने वाले तथा उसके नियुक्त शासकों के अधिकारों को चुनौती देने वाले सिक्खों से वह बहुत दुखी था। वह सिक्खों को सख़्त सबक सिखाना चाहता था। उसने क्रूर एवं ज़ालिम शासक जहान ख़ान को लाहौर का गवर्नर नियुक्त किया तथा उसे ताकीद की कि वह सिक्खों के अस्तित्व को मिटाने के लिए अपनी पूरी ताकत लगा दे। ज़ालिम जहान ख़ान ने अपने सैनिक जत्थे गांव-गांव भेज सिक्खों को ढूंढ-ढूंढकर कत्ल करवाना शुरू कर दिया। रणनीति के तहत सिक्ख गांव छोड़कर दूर

**बी-एक्स ९२५, मोहल्ला संतोखपुरा, होशियारपुर रोड, जलंधर-१४४००४, मो. ९८७२२-५४९९०*

जंगलों में चले गए। इसी दौरान जहान ख़ान को किसी ने उकसाया कि जब तक श्री अमृतसर में सिक्खों का पवित्र अमृत सरोवर और श्री हरिमंदर साहिब कायम है, तब तक सिक्ख खत्म नहीं हो सकते। यहां से उन्हें नया जीवन, नव-उत्साह एवं नया जोश मिलता है। वे फिर-फिर अपने विरोधियों के सिरों पर मृत्यु बन मंडराने लगते हैं।

जहान ख़ान ने श्री अमृतसर को अपनी गतिविधियों का मुख्य केंद्र बना लिया और सिक्खों के जज़बात कुचलने के लिए श्री हरिमंदर साहिब की इमारत को ढहा दिया तथा पवित्र सरोवर को पाट दिया। यह ऐतिहासिक घटना सन् १७६० ई की है। अब्दाली एवं जहान ख़ान को क्या पता था कि इस घटना के बाद सिक्ख विश्व-इतिहास के पन्नों में अपनी लामिसाल शहादतों का एक और सुनहरी पन्ना जोड़ने वाले हैं; मानव-इतिहास को नया मोड़ देने वाले हैं।

श्री हरिमंदर साहिब के हुए अपमान का समाचार जब बाबा दीप सिंघ जी को श्री दमदमा साहिब में मिला, तब उनके हृदय को गहरा सदमा पहुंचा। मस्तिष्क में क्रोध, आक्रोश की ज्वाला धधक उठी। स्वाभिमान, गौरव और सिक्ख पंथ की प्रतिष्ठता का सवाल था। सच्चाई, निष्ठा, आस्था और धर्म को अहंकारियों, अधर्मियों, ज़ालिमों ने ललकारा था। बाबा जी ने उसी समय श्री हरिमंदर साहिब की पवित्रता को आंच पहुंचाने वालों के साथ दो हाथ करने का निर्णय किया और आसपास के क्षेत्रों में सिक्खों को सूचना भेज दी। उनके व्यक्तित्व का बहुत ज्यादा प्रभाव था। उनकी आगवानी में तुरंत सिंघ इकट्ठा होना शुरू हो गए। श्री दमदमा साहिब (मालवा क्षेत्र) से कूच करने के बाद खालसा दल के जांबाज़ों की संख्या पांच हज़ार से अधिक हो गई।

माझा क्षेत्र में दाख़िल होने के बाद तथा श्री अमृतसर के निकट पहुंचकर वाहिगुरु के समक्ष अरदास की गई। बाबा दीप सिंघ जी ने अपने खंडे (एक शस्त्र) से लकीर खींची और कहा, "जो शहादत देने के लिए तैयार हैं, वे इस लकीर को पार करें।" सभी सिंघ लकीर पार कर गए तथा जयकारा गुंजाते हुए श्री अमृतसर की ओर बढ़ने लगे।

बाबा दीप सिंघ जी के नेतृत्व में आ रही सिक्खों की सेना की सूचना पाकर श्री अमृतसर की परिधि के पांच मील बाहर गांव गोहलवाड़ में जहान ख़ान २० हज़ार सैनिक लेकर पहुंच चुका था। वहां पर घमासान युद्ध हुआ। जोश में सिंघों ने ऐसा आक्रमण किया कि जहान ख़ान की सेना के हौसले पस्त होने लगे। उसकी सेना पीछे हटने लगी। सिंघ शस्त्र-कला के जौहर दिखाते हुए शहर के समीप आ गए। इस युद्ध में बाबा दीप सिंघ जी के सहायक भाई दिआल सिंघ ने जहान ख़ान का सिर काटकर उसे मृत्यु के घाट उतार दिया। इसके बाद शहर के द्वार के निकट श्री रामसर साहिब के पास पुन: भयंकर युद्ध हुआ। यहां पठानी सेना के दूसरे सेनापति जमाल शाह ने बाबा दीप सिंघ जी को चुनौती दी कि वे उनसे अकेले मुकाबला करें। अस्सी वर्ष की वृद्धवास्था में होने के बावजूद बाबा दीप सिंघ जी ने नवयुवक जमाल शाह की चुनौती को स्वीकार किया। इस समय तक शहर की गलियां खून तथा लाशों से भर चुकी थीं। बाबा दीप सिंघ जी के साथी-प्रमुख-- भाई धरम सिंघ, भाई खेम सिंघ, भाई मान सिंघ और भाई राम सिंघ अनेक सिंघों सहित शहीद हो गए। जमाल शाह को बाबा जी ने मार-मुकाया। बाबा दीप सिंघ जी गंभीर रूप से घायल हो गए। फिर भी वे लड़ते-लड़ते आगे बढ़ते रहे। अपनी भक्ति की शक्ति के बल पर बाबा दीप

(शेष पृष्ठ ३९ पर)

दशम पातशाह जी का अनन्य श्रद्धालु सिक्ख
भाई निगाहिया सिंघ आलमगीर

*-सिमरजीत सिंघ**

पांच दरियाओं की धरती के शूरवीर बाशिंदे हमेशा ही हक-सच की लड़ाई लड़ने में प्रथम कतार में रहे हैं। इस धरती के जांबाज़ योद्धे हमेशा जुल्म से टक्कर लेते एवं शहीदियां प्राप्त करते रहे। आज दुनिया में बहुत कम ०.५ प्रतिशत से भी अल्पसंख्यक 'सिक्ख कौम' दुनिया में सबसे ज्यादा शहीदियां प्राप्त करने वाली कौम है। इस कौम ने सदैव ही अपना नाता हक-सच की लड़ाई लड़ने वाले शूरवीर योद्धाओं के साथ बनाए रखा है। जहां यह कौम अपने तथा मानवता के हकों के लिए इतनी जागृत है, वहीं इसमें एक आलस्य है कि यह अपने इतिहास को अच्छे ढंग से संभाल न सकी। आज हम सिक्ख कौम के हज़ारों शहीदों के जीवन के बारे में जानकारी प्राप्त करने से वंचित रह गए हैं। सिक्ख कौम के जो मौलिक स्रोत हैं वो लगभग सारे के सारे ही गैर-सिक्खों द्वारा लिखे हुए होने के कारण सिक्खी के बारे में सही जानकारी नहीं दे सके या उन्होंने योद्धाओं की कई बातों को अपने तरीके से विख़्यात कर दिया। जो कथाएं या इतिहास सिक्खों में सीना-बसीना चली आ रही बातों को सुनकर लिखा भी उसमें उन्होंने श्रद्धामयी एवं भावुकता में करामाती पक्ष बहुत बड़े पैमाने पर जोड़ दिया, जिस कारण कई शहीद शूरवीरों की मेहनत को सिर्फ करामात के रूप में ही जाना जाने लग गया। आज हमारे पास जो इतिहास मैजूद है उसमें से हज़ारों ही जांबाज़ योद्धाओं का इतिहास गायब है। जो इतिहास हमारे पास मौजूद भी है, वो भी समय की मार तले आकर दिन-प्रतिदिन गायब होता जा रहा है; हमारे स्रोत खत्म होते जा रहे हैं।

दशम पातशाह श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने जब हक-सच की लड़ाई लड़ते हुए श्री अनंदपुर साहिब का किला छोड़ा तो उनके साथ इस लड़ाई में अपने-अपने ढंग से सैकड़ों शूरवीरों ने साथ दिया और अपना बलिदान दिया। ऐसा ही एक शूरवीर गुरु-घर का श्रद्धालु था भाई निगाहिया सिंघ आलमगीर। इसके बारे में ज्ञानी गिआन सिंघ ने 'तवारीख गुरू खालसा' में ज़िक्र किया है कि जब श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी चमकौर की गढ़ी से निकलकर माछीवाड़ा पहुंचे तो वहां भाई दया सिंघ, भाई धरम सिंघ, भाई गनी खां, भाई नबी खां तथा भाई मान सिंघ गुरु जी को एक पलंग पर बैठाकर उच्च के पीर के रूप में लिए जा रहे थे। जब वो नगर आलमगीर के समीप पहुंचे तो उनको रास्ते में भाई निगाहिया सिंघ मिला, जो अपने पुत्र के साथ घोड़े बेचने जा रहा था। रास्ते में गुरु जी के दर्शन करके उनको एक घोड़ा सवारी के लिए पेश कर दिया, जिस कारण गुरु साहिब बहुत खुश हुए तथा पलंग छोड़कर घोड़े पर सवार हो गए। इस जगह पर आजकल महानगर लुधियाना शहर से लगभग १० किलोमीटर की दूरी पर लुधियाना-मलेरकोटला सड़क पर आलीशान गुरुद्वारा मंजी साहिब सुशोभित है। गुरुद्वारा

**संपादक, गुरमति ज्ञान एवं गुरमति प्रकाश*

साहिब को सिक्ख राज्य के समय ७० बीघे ज़मीन भी दी गई थी। इस गुरुद्वारा साहिब में हर वर्ष १४, १५, १६ पौष वाले दिन गुरु जी की आमद की याद में जोड़-मेला (सलाना समारोह) होता है।

इस गांव के बारे में कहा जाता है कि १७वीं सदी के आरंभ में यह गांव बस चुका था। मौखिक रूप से पीढ़ी-दर-पीढ़ी चली आ रही रिवायत के अनुसार गांव बीजा के पास सराए लशकरी ख़ान कोटां का उद्घाटन करने के लिए मुगल सम्राट औरंगज़ेब आया था। जब औरंगज़ेब उद्घाटन करने के लिए आया तो गांव धांदरां के चौधरी ने उसके आगे फरियाद की कि नवाब लोधी उसकी लड़की के साथ ज़बरन शादी करनी चाहता है। यह सुनने के उपरांत औरंगज़ेब ने शादी के दिन नवाब लोधी का सिर काट दिया। इस कारण इस बस्ती का नाम औरंगज़ेब आलमगीरी के नाम पर आलमगीर पड़ गया।

भाई निगाहिया सिंघ की पारिवारिक पृष्ठभूमि के बारे में खोज करने पर पता चला है कि ज़िला लुधियाना में एक गांव गुज्जरवाल है। उस गांव का निवासी 'तोता जट्ट' (गरेवाल) था। उसके तीन पुत्र थे-- सेमा, जोधा तथा उगर। सेमा अपनी जवानी के दिनों में १६०० ई के लगभग गांव गुज्जरवाल छोड़कर आलमगीर आ गया तथा यहां ज़मीन खरीदकर आलमगीर का निवासी बन गया। आज का गांव आलमगीर सेमे की औलाद ही माना जाता है। सेमे का पुत्र था-- बलाकी तथा बलाकी का पुत्र था-- लखमीर। लखमीर का पुत्र था-- निगाहिया सिंघ अपने पांचों भाइयों में से सबसे बड़ा था। भाई निगाहिया सिंघ के अन्य चार भाई-- सूरज मल्ल, राम सिंघ, नूनी तथा मीठा थे। भाई निगाहिया सिंघ के तीन पुत्र थे-- सरदूल सिंघ, बाघा सिंघ तथा भागा सिंघ।

भाई निगाहिया सिंघ के जन्म के बारे में ख़्याल किया जाता है कि लखमीर सिंघ का विवाह मूलोवाल के भाई पिआरे की पुत्री के साथ संपन्न हुआ था। इस प्रकार भाई निगाहिया सिंघ का ननिहाल गांव मूलोवाल है तथा भाई पिआरा उनके नाना जी का नाम था जो गुरु-घर का प्रेमी था। एक बार जब श्री गुरु तेग बहादर साहिब मालवा क्षेत्र में प्रचार करने आए तो वो घनौली, रोपड़, नंदपुर कलौड़, दादू माजरा, उगाणा, नौ लक्खा, टहिलपुर तथा लंग आदि गांवों में लोगों को उपदेश देते हुए गांव मूलोवाल आ गए। माइआ गोंदा वहां का पंच, गुरु जी के पास रसद लेकर आया। गुरु जी ने पीने के लिए पानी मांगा। माइए ने विनती की कि पास वाला कुआं खारा एवं कड़वा है, मीठे पानी वाला कुआं थोड़ी दूर है, वहां से पानी ले आते हैं, परंतु गुरु जी ने उसी कुएं का पानी मंगवाकर पिया। बाद में सारा गांव वहीं से पानी भरने लगा। गुरु जी ने माइए को सिरोपाउ दिया। अब उसकी संतान वहीं रहती है। यहां आजकल गुरुद्वारा मंजी साहिब बना हुआ है, जो महाराजा करम सिंघ पटियाला वाले ने संवत् १८८२ बिक्रमी में बनवाया था तथा इसके नाम पर जागीर भी लगवाई थी। मूलोवाल गांव का (हरीके गोत का जट्ट) भाई पिआरा अपनी बेटी, (जो लखमीर सिंघ आलमगीर की पत्नी थी) तथा अपनी पत्नी के साथ नवम् पातशाह श्री गुरु तेग बहादर साहिब के दर्शन करने के लिए आया तो उनकी बेटी ने गुरु जी से मांग की कि मेरा पहला बेटा गुरु जी की सेवा में अपना जीवन अर्पित करे। गुरु जी ने कहा कि इसी तरह ही होगा। इसी वर्ष के

अंतिम महीनों में भाई निगाहिया सिंघ का जन्म हुआ माना जाता है। इस तरह वह दशम पातशाह श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का हम-उम्र ही था।

चमकौर साहिब की जंग में दशम पातशाह के दोनों साहिबज़ादे तथा अन्य सिंघ शहीद हुए। शिरोमणि गु. प्र. कमेटी द्वारा प्रकाशित विवरण के अनुसार श्री चमकौर साहिब की रणभूमि में श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के बड़े साहिबज़ादे-- बाबा अजीत सिंघ जी तथा बाबा जुझार सिंघ जी के साथ पांच प्यारों में से भाई मोहकम सिंघ जी, भाई हिंमत सिंघ जी तथा भाई साहिब सिंघ जी के साथ निम्नलिखित सिंघ थे :

१. भाई जवाहर सिंघ श्री अमृतसर
२. भाई रतन सिंघ माणकपुर
३. भाई माणक सिंघ माणोके दुआबा
४. भाई क्रिपाल सिंघ करतारपुर 'रावी'
५. भाई दिआल सिंघ रामदास
६. भाई गुरदास सिंघ श्री अमृतसर
७. भाई ठाकुर सिंघ छारा
८. भाई परेम सिंघ मनीमाजरा
९. भाई हरदास सिंघ ग्वालियर
१०. भाई संगो सिंघ माछीवाड़ा
११. भाई निहाल सिंघ माछीवाड़ा
१२. भाई महिताब सिंघ रूपनगर
१३. भाई गुलाब सिंघ माछीवाड़ा
१४. भाई खड़क सिंघ रूपनगर
१५. भाई टेक सिंघ रूपनगर
१६. भाई तुलसा सिंघ रूपनगर
१७. भाई सहिज सिंघ रूपनगर
१८. भाई चढ़त सिंघ रूपनगर
१९. भाई झंडा सिंघ रूपनगर
२०. भाई सुजान सिंघ रूपनगर
२१. भाई गंडा सिंघ पेशावर
२२. भाई निशान सिंघ पेशावर
२३. भाई बिशन सिंघ पेशावर
२४. भाई गुरदित्त सिंघ पेशावर
२५. भाई करम सिंघ भरतपुर
२६. भाई सुरजीत सिंघ भरतपुर
२७. भाई नरैण सिंघ भरतपुर
२८. भाई जैमल सिंघ भरतपुर
२९. भाई गंगा सिंघ ज्वालामुखी
३०. भाई शेर सिंघ आलमगीर
३१. भाई सरदूल सिंघ आलमगीर
३२ भाई सुक्खा सिंघ आलमगीर
३३. भाई पंजाब सिंघ खंडू
३४. भाई दमोदर सिंघ खंडू
३५. भाई भगवान सिंघ खंडू
३६. भाई सरूप सिंघ काबल
३७. भाई जवाला सिंघ काबल
३८. भाई संत सिंघ पोठोहार
३९. भाई आलम सिंघ पोठोहार
४०. भाई संगत सिंघ
४१. भाई मदन सिंघ
४२. भाई कोठा सिंघ

इन सिंघों ने ज़ालिमों की फौज का डटकर मुकाबला करते हुए शहीदियां प्राप्त कीं। इनमें से भाई शेर सिंघ, भाई सरदूल सिंघ तथा भाई सुक्खा सिंघ शहीदी प्राप्त करने वाले गांव आलमगीर के थे। इनमें से भाई सरदूल सिंघ भाई निगाहिया सिंघ का बड़ा पुत्र था। इन शहीदों का दाह संस्कार वहीं जंग के मैदान में कर दिया गया था, जहां गुरुद्वारा कतलगढ़ साहिब बना हुआ है। आलमगीर के निवासियों ने अपने गांव के शहीदों की यादगारें अपने गांव में भी बनाई हुई हैं।

जब दशम पातशाह १४ पौष, १७६१ संवत् मुताबिक २९ दिसंबर, १७०४ ई को आलमगीर

पहुंचे तो उस समय भाई निगाहिया सिंघ को पता था कि साहिबज़ादों के साथ उनका बड़ा पुत्र शहीद हो चुका है तथा दशम पातशाह का पीछा मुगल फौज कर रही है, इसी लिए उसने गुरु साहिब को घोड़ा पेश किया ताकि वो जल्द से जल्द दूर चले जाएं। आलमगीर गांव के मध्य एक धर्मशाला है। गांव वालों के अनुसार यह भाई निगाहिया सिंघ का ही घर था, जिसको अब धर्मशाला के रूप में इस्तेमाल किया जा रहा है। गांव वालों ने चाहे गुरमति-विरोधी विचारधारा के अनुसार गांव के शहीदों की समाधियां बना ली हैं परंतु उन्होंने भाई निगाहिया सिंघ के घर को संभालने की कोशिश नहीं की। परिणामस्वरूप वह धर्मशाला बन गया है तथा लोग इस स्थान को मन बहलाने के लिए ताश आदि खेलने के रूप में इस्तेमाल कर रहे हैं।

जब भाई निगाहिया सिंघ ने गुरु साहिब को घोड़ा भेंट कर दिया तो गुरु साहिब घोड़े पर सवार होकर निकल गए। उसके बाद मुगल फौज गुरु जी का पीछा करती हुई गांव में आ गई। उसने भाई निगाहिया सिंघ के घर को घेरा डाल लिया। वह उस घेरे में से निकलकर अपनी ननिहाल से गांव मूलोवाल पहुंच गया। मुगल सेना ने उसका सारा परिवार कत्ल कर दिया। जब गुरु साहिब को मालूम पड़ा कि भाई निगाहिया सिंघ का सारा परिवार कत्ल कर दिया गया है तो श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने रात को ही साधारण लिबास में गांव मूलोवाल पहुंचकर भाई निगाहिया सिंघ को ढांढ़स बंधाया। इस तरह १५ पौष, १७६१ बिक्रमी संवत् को भाई निगाहिया सिंघ तथा उसके नाना पिआरा सिंघ की गांव मूलोवाल में गुरु साहिब से अंतिम मुलाकात हुई। इस सम्बंध में एक हुकमनामा भी मिलता है, जो २७ अगस्त १९५२ ई के दिन बुधवार को गुरुद्वारा मंजी साहिब के पास पश्चिम दिशा की तरफ सेवा करती संगत को मिला था। यह हुकमनामा खद्दर के सफेद रुमाले में लिपटा हुआ था तथा मिट्टी के कुल्हड़ में पड़ा था। कुल्हड़ के मुंह पर काले पत्थर की घिसी कुछ राख मिली। यह हुकमनामा गुरुद्वारा श्री मंजी साहिब पातशाही नौवीं, दसवीं, गांव मूलोवाल, ज़िला संगरूर द्वारा छपाया हुआ मिलता है। हो सकता है कि प्रिंटर्स द्वारा लगां-मात्राओं अथवा किसी अक्षर की कोई गलती हो गई हो परंतु उन्होंने अपने द्वारा असल की कापी ही बताई है। इसकी प्रमाणिकता सम्बंधी भी खोज करने की ज़रूरत है।

अत: इस प्रकार अंदाज़ा लगाया जा सकता है कि जब श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी भाई निगाहिया सिंघ को आखिरी बार गांव मूलोवाल में जाकर मिले, उस समय भाई साहिब की उम्र ४० वर्ष की होगी। इसके बाद भाई निगाहिया सिंघ का क्या बना, इसके बारे में कुछ पता नहीं चलता। यह खोज का विषय है। इसकी ओर इतिहासकारों को ध्यान देना चाहिए।

खालसा पंथ अपने विरसे को संभालने में काफी आलसी है। यही कारण है कि पंथ के लिए अपने सारे परिवार की कुर्बानी देने वाले भाई निगाहिया सिंघ के अन्य जीवन की खास जानकारी नहीं मिलती। जो कौम अपने विरसे एवं इतिहास को नहीं संभालती, उसका क्या हश्र होता है यह बताने की ज़रूरत नहीं। आओ! हम अपने विरसे को संभालते हुए अपने शहीदों के बारे में खोज करके उनकी जानकारी पूरी दुनिया तक पहुंचाएं ताकि हमारी आने वाली पीढ़ियां अपने इतिहास पर फख्र करके, अपना सर ऊंचा करके चल सकें तथा अपने पूर्वज़ों के जीवन से सही दिशा लेकर हमेशा हक-सच की आवाज़ उठाते हुए इस पर डटी रहें।

श्री हरिमंदर साहिब : निर्माण का ऐतिहासिक विवरण

*-डॉ. राजेंद्र सिंघ 'साहिल'**

श्री हरिमंदर साहिब एक ऐसा अद्वितीय आध्यात्मिक केंद्र है जो संपूर्ण मानवता में अकाल पुरख के आलौकिक नूर का संचार कर रहा है। 'हरिमंदर' का अर्थ है-- हरि का घर अर्थात् अकाल पुरख का निवास-स्थान। गुरबाणी में 'हरिमंदर' की विशेषता एवं रूहानी प्रभाव से संबंधित स्पष्ट संकेत विद्यमान हैं। तीसरे पातशाह श्री गुरु अमरदास जी का फ़रमान है :

हरि मंदर महि हरि वसै सरब निरंतरि सोइ ॥
(पन्ना १३४६)

एक अन्य स्थान पर तीसरे पातशाह कथन करते हैं कि 'हरिमंदर' वह स्थान है जहां पहुंचकर 'हरि' का ज्ञान प्राप्त हो जाता है :

हरि मंदरु सोई आखीऐ जिथहु हरि जाता ॥
(पन्ना ९५३)

पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी ने इसी संकल्प को सम्मुख रखकर श्री हरिमंदर साहिब का निर्माण कराया।

प्रथम पातशाह से आशीर्वाद-प्राप्त भूमि : गुरमति में गुरु का स्थान सर्वोच्च है। चौथे पातशाह श्री गुरु रामदास जी का कथन है कि सतिगुरु जहां आकर विराजमान होता है, वह धरती हरियावली हो जाती है :

सा धरती भई हरीआवली जिथै मेरा सतिगुरु बैठा आइ ॥ *(पन्ना ३१०)*

श्री अमृतसर साहिब की भूमि भी श्री गुरु नानक देव जी के चरणों का स्पर्श पाकर सर्वदा के लिए हरियावली हो गई। 'तवारीख गुरू खालसा' में ज्ञानी गिआन सिंघ लिखते हैं कि प्रथम पातशाह अपनी पहली उदासी (धर्म प्रचार-यात्रा) के समय २२ कार्तिक, संवत् १५५६ बि. मुताबिक सन् १४९९ ई में फतिआबाद से रामतीर्थ जाते समय सुलतान पिंड (वर्तमान सुलतानविंड) की जूह में ढाब के किनारे आ बिराजे।

गांव के एक किसान के घर उत्सव था। वह खीर, कड़ाह (हलवा), मंडे (रोटी) आदि भोज्य पदार्थ लेकर गुरु जी को छकाने के लिए लाया। गुरु जी एवं भाई मरदाना जी ने बड़े प्रेम से भोजन किया और तन्मय होकर शबद-गायन किया। श्री गुरु नानक देव जी ने प्रसन्न होकर वचन किया कि यहां 'भोग-मोख' का प्रवाह चलेगा।

कालांतर में इसी क्षेत्र में श्री हरिमंदर साहिब, अमृत-सरोवर एवं श्री अमृतसर नगर स्थापित होकर विख्यात हुए।

अमृत सरोवर का निर्माण : तीसरे पातशाह श्री गुरु अमरदास जी की अभिलाषा थी कि श्री गुरु नानक देव जी के चरणों का स्पर्श प्राप्त इस भूमि पर एक नगर बसाया जाए, इसलिए उनकी आज्ञा पाकर चतुर्थ पातशाह श्री गुरु रामदास जी ने यहां एक नगर बसाने का कार्य आरंभ किया। सबसे पहले तुंग, गुमटाला, गिलवाली, सुलतानविंड आदि गांवों के नज़दीक संवत् १६२७ बि. मुताबिक सन् १५७० ई में एक सरोवर खुदवाना प्रारंभ किया गया, जिसका

**१/३३८, 'स्वप्नलोक', दशमेश नगर, मंडी मुल्लांपुर दाखा (लुधियाना), पंजाब-१४११०१, फोन: ९४१७२-७६२७१*

नाम 'संतोखसर' रखा गया। आस-पास के गांवों से आवश्यक ज़मीन खरीदकर एक नये नगर की नींव रखी गई, जिसका नाम रखा गया-- गुरु का चक्क। यहीं श्री गुरु रामदास जी का निवास-स्थान बना जो 'गुरु के महिल' नाम से प्रसिद्ध हुआ। यह पावन स्थान बाद में श्री गुरु अरजन देव जी एवं श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब का निवास-स्थान बना और नवम् पातशाह श्री गुरु तेग बहादर साहिब का जन्म-स्थान बनकर विख्यात हुआ।

श्री गुरु रामदास जी ने तीसरे पातशाह के हुक्म के अनुसार यहां ढाब पर संवत् १६३४ बि. तद्नुसार सन् १५७७ ई में सरोवर खुदवाना आरंभ किया। श्री गुरु अरजन देव जी ने इसे संवत् १६४३ बि. तद्नुसार सन् १५८६ ई में पक्का करवाया। इस सरोवर को 'राम सर', 'रामदास सर' और बाद में 'अमृत सर' कहकर पुकारा गया। अमृत-सरोवर के इसी नाम पर शहर का नाम भी 'अमृतसर' प्रसिद्ध हुआ।

गुरबाणी में 'अमृत-सरोवर' अर्थात् 'अमृतसर' की महिमा का सुंदर बखान मौजूद है :

-अंम्रित सरु सतिगुरु सतिवादी जितु नातै कऊआ हंसु होहै ॥ (पन्ना ४९३)

-सतिगुरु पुरखु अंम्रित सरु वडभागी नावहि आइ ॥ (पन्ना ४०)

-हरिहां नानक कसमल जाहि नाइऐ रामदास सर ॥ (पन्ना १३६२)

-रामदास सरोवरि नाते ॥
सभि उतरे पाप कमाते ॥ (पन्ना ६२५)

गुरु साहिबान का फ़रमान स्पष्ट है कि अंतर्मन के अमृत सरोवर में स्नान करो और सभी मलों-बुराइयों से मुक्त हो जाओ। बाहरी सरोवर तो प्रतीक रूप हैं सामाजिक ग़ैर-बराबरी और असमानता को समाप्त करने के :

अंतरु निरमलु अंम्रित सरि नाए ॥
सदा सूचे साचि समाए ॥ (पन्ना ३६३)

श्री हरिमंदर साहिब की स्थापना : पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी ने संवत् १६४५ बि. तद्नुसार सन् १५८८ ई की माघी वाले दिन अमृत सरोवर के मध्य श्री हरिमंदर साहिब का निर्माण आरंभ कराया। गुरु जी के परम मित्र सूफी संत साईं मीयां मीर जी ने श्री हरिमंदर साहिब की नींव रखी। (सिक्ख इतिहासकारों में एक वर्ग यह मानता है कि श्री हरिमंदर साहिब की नींव स्वयं पंचम पातशाह ने रखी थी।)

निरंतर गुरु-कृपा और संगत के परिश्रम से १६ वर्षों अर्थात् सन् १६०४ में श्री हरिमंदर साहिब का निर्माण संपूर्ण हुआ। इसी वर्ष श्री गुरु ग्रंथ साहिब की संपादना का कार्य भी संपूर्ण हुआ और पंचम पातशाह ने यहां पर श्री गुरु ग्रंथ साहिब का प्रथम प्रकाश कराया।

बाबा बुड्ढा जी पहले ग्रंथी नियुक्त किए गये। पहला 'वाक' लिया गया जो इस प्रकार स्वरूपित हुआ :

संता के कारजि आपि खलोइआ हरि कंमु करावणि आइआ राम ॥
धरति सुहावी तालु सुहावा विचि अंम्रित जलु छाइआ राम ॥ (पन्ना ७८३)

इस प्रकार श्री हरिमंदर साहिब में आठों पहर नाम और गुरबाणी का प्रवाह आरंभ हो गया। पंचम पातशाह ने मानवता को उसका महान आध्यात्मिक केंद्र प्रदान कर दिया।

पंचम पातशाह ने श्री हरिमंदर साहिब के चार प्रवेश द्वार बनाये जो चारों वर्णों, चारों दिशाओं से आने वाले प्राणियों के लिए खुले हैं। गुरु जी का उद्देश्य था कि यहां से प्राणी अकाल पुरख का ज्ञान और प्रकाश प्राप्त करके अपने

जीवन को आलोकित करेंगे। गुरु जी श्री हरिमंदर साहिब को ब्रह्म-ज्ञान की समझ देने वाला, साधसंगत से सुशोभित स्थान बताते हैं।

श्री हरिमंदर साहिब आध्यात्मिक उन्नति का एक ऐसा स्रोत बन गया जो युगों-युगों तक मनुष्यों को हरि-मिलाप की राह दिखाने की सामर्थ्य रखता है।

श्री हरिमंदर साहिब का महत्त्व : श्री हरिमंदर साहिब सिक्खों का आध्यात्मिक केंद्र होने के साथ-साथ इनकी जीवन-शक्ति का स्रोत भी बना रहा है। मानवता के शत्रुओं का ख़्याल था कि सिक्खों को सारी शक्ति श्री हरिमंदर साहिब से ही प्राप्त होती है। उनका सोचना था कि सिक्ख अमृत सरोवर का जल पी-पीकर ही इतने बहादुर हो गये हैं। सिक्खों को मानसिक रूप से तोड़ने के लिए श्री हरिमंदर साहिब को अक्सर निशाना बनाया गया परंतु सिक्खों ने हर आक्रमण के बाद अपनी आन के इस प्रतीक को फिर से निर्मित कर लिया।

संवत् १८०२ बि. (सन् १७४५ ई) में मस्से रंघड़ ने श्री हरिमंदर साहिब में शराब के नशे में नाच करवाकर इस पवित्र स्थान का घोर अपमान किया। तब भाई महिताब सिंघ और भाई सुक्खा सिंघ ने बीकानेर से आकर मस्से रंघड़ का सिर काटकर उसे उसकी करनी का दंड दिया।

संवत् १८१० बि. (सन् १७५२-५३ ई) में मीर मन्नू ने अमृत सरोवर को मिट्टी से भरवा दिया। सिक्खों ने सरोवर को फिर स्वच्छ कर लिया। इससे पहले संवत् १८०८ बि. (सन् १७५१ ई) में दीवान-ए-लाहौर लखपत राय ने अमृत सरोवर को मिट्टी से भरवा दिया था। दल खालसा ने शीघ्र ही नगर पर अधिकार करके सरोवर की कार-सेवा कर ली। संवत् १८१४ बि. (सन् १७५७ ई) में अहमद शाह अब्दाली ने अमृत सरोवर को मिट्टी से भरवा दिया। श्री हरिमंदर साहिब की रक्षा करते हुए इसी समय बाबा दीप सिंघ जी शहादत प्राप्त कर गये थे। सिक्खों ने नगर पर कब्ज़ा किया और अमृत-सरोवर को स्वच्छ कर अमृत जल से परिपूर्ण कर लिया।

इसी प्रकार सन् १७६२ ई में अब्दाली ने श्री हरिमंदर साहिब को बारूद से उड़ा दिया और अमृत सरोवर को मिट्टी से भर दिया। एक बार फिर सिक्खों ने पवित्र सरोवर को मुक्त करवाकर कार-सेवा कर ली। संवत् १८२१ बि. (सन् १७६४ ई) में सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया ने श्री हरिमंदर साहिब की नई इमारत का निर्माण आरंभ करा दिया जो शीघ्र संपूर्ण हो गया।

बाद में महाराजा रणजीत सिंघ द्वारा संवत् १८५९ बि. (सन् १८०२ ई) में श्री हरिमंदर साहिब को संगमरमर और सोने से विभूषित कराया गया। आज श्री हरिमंदर साहिब इसी स्वरूप में शोभायमान है।

श्री हरिमंदर साहिब सिक्ख धर्म का आध्यात्मिक-सांसारिक केंद्र है जो संपूर्ण मानवता को रूहानी और दुनियावी नेतृत्व प्रदान करता आ रहा है। पंचम पातशाह का फ़रमान है : *डिठे सभे थाव नही तुधु जेहिआ ॥ (पन्ना १३६२)*

पटना साहिब

*-प्रो. लाल मोहर उपाध्याय**

पटना शहर ने तीन गुरु साहिबान के चरणों का स्पर्श प्राप्त किया है। सबसे पहले इसको श्री गुरु नानक देव जी ने अपनी पूरब दिशा की पहली यात्रा के समय पवित्र किया। गुरु जी पश्चिम दरवाज़ा से अंदर आये और भक्त जैतामल के पास ठहरे, जहां पर गुरुद्वारा गऊघाट (गायघाट) सुशोभित है। यहीं से गुरु जी ने भाई मरदाना जी को एक कीमती हीरा देकर बेचने के लिए भेजा। भाई मरदाना जी कपड़ा बाज़ार, सब्ज़ी बाज़ार होते हुए एक जौहरी की दुकान में पहुंचे जिसका नाम सालिस राय था। उसके नौकर अधरका ने हीरा देखते हुए मालिक सालिस राय से मुलाकात कराई। हीरा कीमती होने के कारण सालिस राय ने उसकी दर्शन-भेंट एक सौ रुपया देकर भाई मरदाना जी को हीरा वापिस कर दिया। सालिस राय तथा अधरका ने भाई मरदाना जी से श्री गुरु नानक देव जी के दर्शन करने की इच्छा जाहिर की। गुरु जी के दर्शन के उपरांत वे उनके अनन्य भक्त हो गए। सालिस राय ने गुरु जी को अपने निवास स्थान पर पधारने के लिए निमंत्रित किया। सालिस राय के निमंत्रण को स्वीकार करते हुए गुरु जी ऐतिहासिक कथनानुसार लगभग चार महीने यहां पर ठहरे और सुबह-शाम संगत को उपदेश देते रहे। जाते समय इस स्थान पर एक धरमसाल (संगत) बनाकर सालिस राय को उसका सेवक/प्रचारक बनाया।

नवम् पातशाह श्री गुरु तेग बहादर साहिब पूरब की यात्रा के समय श्री गुरु नानक देव जी के मिशन का प्रचार करते हुए १६६६ ई के आरंभ में पटना साहिब आए। इनके साथ गुरु जी की मां माता नानकी जी, धर्म-पत्नी माता गुजरी जी तथा उनके भ्राता भाई किरपाल चंद जी एवं अन्य दरबारी सिक्ख थे। कुछ समय बड़ी संगत गायघाट ठहरने के उपरांत गुरु जी परिवार सहित सालिस राय जौहरी की संगत में एक जलूस के रूप में लाये गये। उस समय इस संगत का संचालक अधरका का परपोता घनश्याम था।

कुछ दिन यहां ठहरने के बाद गुरु जी परिवार को यहां छोड़कर बंगाल तथा आसाम धर्म-प्रचार हेतु चले गए। मुंगेर जाकर पटना साहिब की संगत के नाम एक हुकमनामा (आदेश-पत्र) जारी किया। इसी हुकमनामे में पटना साहिब को गुरु का घर कहा है।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का जन्म यहीं (पटना साहिब में) पौष सुदी सप्तमी, संवत् १७२३, तद्नुसार २२ दिसंबर, १६६६ ई को हुआ था।

श्री गुरु तेग बहादर साहिब उस समय अपनी प्रचार-यात्रा हेतु ढाका में थे, जब पटना साहिब से श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के जन्म का संदेश उनको मिला। गुरु जी ने संगत के साथ खुशियां मनाई।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने अपने बचपन

**गुरबाणी प्रचार सेवा केंद्र, अशोक चक्र गली, गुरहटा, पटना सिटी- ८००००८, फोन: ९३०४८९५६४७*

के लगभग ७ वर्ष पटना साहिब में व्यतीत किए। अपने नन्हें-नन्हें पैरों की अमिट छाप वे इस भूमि पर छोड़कर गये। पटना साहिब में पंडित शिवदत्त, नवाब रहीम बख़्श, पीर अरीफोदीन पीर भीखण शाह, राजा फ़तहि चंद मैनी गुरु जी के खास श्रद्धालुओं में थे।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के पवित्र जन्म-स्थान वाली इमारत की सेवा पहली बार स्थानीय राजा फ़तहि चंद मैनी ने संवत् १७२२ में करवाई थी।

मुल्ला अहमद बाबाहनी १८वीं सदी के अंत में पटना साहिब आये थे, जिन्होंने मिरात-उल-आहिवाल जहानुमा में इस पावन स्थान के बारे में नीचे लिखे शब्द अंकित किए हैं :-

"श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के जन्म-स्थान पर उनके श्रद्धालुओं ने शानदान यादगारी इमारत बनायी है, जिसका नाम 'हरिमंदर' रखा है। यह सिक्खों की शक्ति का केंद्र बन गया है। इसको 'संगत' भी कहा जाता है। सिक्ख कौम ने इसे अपना तीर्थ बना दिया है जो सिक्खों के लिए सत्कार तथा श्रद्धा का प्रतीक है।"

चार्ल्स विलकिंस, जो एक मार्च, १७८१ ई को यहां आये थे, ने इस पावन स्थान की इमारत के बारे में ये शब्द अंकित किए हैं :-

"यह सारी इमारत लगभग ४० वर्गमीटर क्षेत्र में है, जो भूमि की सतह से ६-७ सीढ़ी ऊंची है। हॉल (कमरा) बीच में है और चार हिस्सों में बंटा हुआ है। यह सारी इमारत लकड़ी की होती हुई भी साफ-सुथरी है। यह इमारत लंबाई में ज्यादा है और चौड़ाई में कम है। सारा फर्श दरियों से ढका हुआ है। ६-७ पालकी साहिब दीवार के किनारे रखे हुए हैं, जिन पर धार्मिक कानून की पुस्तक (श्री गुरु ग्रंथ साहिब) सुशोभित है।. . . हॉल के एक किनारे में छोटा कमरा सुनहरे कपड़े के साथ सजाया हुआ है। मंजी साहिब (पालकी साहिब श्री गुरु ग्रंथ साहिब) अच्छी तरह सजाई हुई है जिसके ऊपर सुनहरी हार पड़ी हुई है। इसके आगे फूलों के गुलदस्ते सजावट के साथ रखे हुए हैं। तीन गोलक रखी हुई हैं जिसमें यात्री लोग दान की वस्तुएं डालते हैं। धार्मिक पुस्तक (श्री गुरु ग्रंथ साहिब) में से प्रतिदिन कुछ बाणियों का पाठ होता है। इसके सुनहरे अक्षर हैं।"

महाराजा रणजीत सिंघ ने भी इस इमारत के निर्माण में योगदान दिया था।

१९३४ ई में आए भूकंप के कारण इस इमारत में कुछ दरारें आ गई थीं जिसकी सिक्ख संगत ने पहले मरम्मत करवाई और बाद में नई इमारत बनाने के लिए योजना तैयार की। चारों तरफ से इसके लिए दान आने लगा। जन्म-स्थान के नज़दीक वाली आवासीय इमारत को फूलकी स्टेट के राजाओं ने पहले ही बना दिया था जिसका सबूत लगे हुए पत्थरों से मिलता है। इस नई इमारत को बनाने में चीफ खालसा दीवान, श्री अमृतसर, शिरोमणि गु. प्र. कमेटी, श्री अमृतसर, अन्य अनेक सिक्ख संस्थाओं तथा संगत का खास तौर से सहयोग मिला है। १० नवंबर, १९५४ ई की कार्तिक पूर्णिमा को श्री गुरु नानक देव जी के जन्म दिवस पर इस पांच-मंज़िला इमारत की नींव रखी गई थी। इस काम को शुरू करने की देर थी कि सिक्ख जगत की तरफ से तन-मन-धन से सेवा होने लगी। कलकत्ता की साधसंगत ने ४०,००१ रुपए का ड्राफ्ट स. सुरजीत सिंघ मजीठिया (उप रक्षा मंत्री, जो उस समय गुरुद्वारा साहिब के अध्यक्ष भी थे) के नाम भेजा। कानपुर की संगत ने २१,००० रुपए इकट्ठा करके भेजे। पटना साहिब तथा बिहार

की संगत ने भी इस शुभ कार्य में अपना सहयोग दिया। सारे हिंदोस्तान से संगत ने योगदान दिया। इस इमारत पर लगभग २० लाख रुपए खर्च हुए। सन् १९५६ ई में पौष सुदी सप्तमी को श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के प्रकाश दिवस पर इस इमारत के निर्माण का काम समाप्त हुआ। इसके हॉल का उद्घाटन महाराजा पटियाला स. यादविंदर सिंघ ने १,००,००० रुपए देकर किया।

इस पांच-मंज़िला इमारत के नीचे तहखाना है। ग्राउंड फ्लोर में श्री गुरु ग्रंथ साहिब, दशम ग्रंथ, गुरु जी के शस्त्र, श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी तथा श्री गुरु तेग बहादर साहिब की खड़ाउं, दशम पातशाह का चोला आदि वस्तुएं शोभनीय हैं। पहली मंज़िल में साधसंगत की ओर से श्री अखंड पाठ साहिब करवाए जाते हैं। दूसरी मंज़िल पर सिक्ख संग्रहालय, तीसरी मंज़िल पर अमृत-पान तथा अनंद कारज (विवाह) करवाए जाने की व्यवस्था है। चौथी मंज़िल पर पुरातन हस्तलिपि और पत्थर के छाप की श्री गुरु ग्रंथ साहिब की प्रति को सुरक्षित रखा गया है। गुरुद्वारा गायघाट में ये वस्तुएं गुरु जी की यादगार के रूप में सुशोभित हैं :-

१. थड़ा साहिब

२. हरसिंगार का वृक्ष

३. गुरु-परिवार की चक्की

४. खिड़की साहिब

यहां श्री गुरु ग्रंथ साहिब का प्रथम प्रकाश पर्व प्रत्येक वर्ष मनाया जाता है।

गुरुद्वारा गोबिंद घाट साहिब : यह पावन स्थान श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी द्वारा बचपन में किए गए कृत्यों की अमर याद दिलाता है। गुरु जी बाल्य-काल में साथियों की दो पार्टियां बनाकर झूठ-मूठ की लड़ाई करते, किले बनाते, विजय प्राप्त करने के ढंग बताते, विजयी घोषित पार्टी को इनाम देते। यह सब गोबिंद घाट नामक स्थान पर गंगा के किनारे होता था। इसी स्थान पर गुरु जी ने पंडित शिवदत्त को मानसिक शांति का पाठ पढ़ाते हुए प्रभु की आराधना करने की प्रेरणा दी थी। इसी स्थान पर गुरु जी ने सोने का कंगन गंगा में फेंका था। इसके द्वारा गुरु जी ने सांसारिक पदार्थों का त्याग करने को प्रकट किया था। इसी स्थान पर एक गुरुद्वारा साहिब है। यह तख़्त साहिब से चार-पांच सौ गज की दूरी पर है।

गुरुद्वारा बाल लीला साहिब : इसे "मैनी संगत" भी कहा जाता है। फ़तहि चंद मैनी एक स्थानीय राजा था। उसकी कोई संतान नहीं थी। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी अपने साथियों के साथ खेलते-खेलते रोज़ाना राजा के महलों में जाते थे। रानी गुरु जी जैसा बालक पाने का संकल्प करती हुई प्रभु के आगे रोज़ाना प्रार्थना करती थी। गुरु जी एक दिन रानी की गोद में जाकर बैठ गए और उसे मां कहकर पुकारा। रानी तृप्त हुई और गुरु जी को धर्म का पुत्र स्वीकार कर लिया। रानी ने उबले हुए चने (घुंघनियां) सब बच्चों को खिलाए। आज भी वहां पर जाने पर घुंघनी का प्रसाद मिलता है। इसका प्रबंध निर्मल संप्रदाय के अधीन है। इस गुरुद्वारा साहिब में निम्नांकित वस्तुएं दर्शनीय हैं :-

१. खीन-खाब जूता जो गुरु जी बाल्यावस्था में पहना करते थे।

२. करोंधा का वृक्ष, जो बारह महीना हरा-भरा रहता है।

गुरुद्वारा साहिब गुरु का बाग : गुरुद्वारा साहिब गुरु का बाग तख़्त साहिब से लगभग दो मील की दूरी पर है। यह स्थानीय नवाब रहीम बख़्श तथा करीम बख़्श दो भाइयों का सूखा हुआ बगीचा था। श्री गुरु तेग बहादर साहिब ने आसाम से वापस लौटते हुए इस बाग में अपना

डेरा डाला था। दोनों भाइयों को सूचना मिली कि किसी संत-महापुरुष के आने पर बाग हरा-भरा होने लगा है। वे अपने दरबारियों के साथ वहां पहुंचे। तब उन्होंने गुरु-घर के नाम पर यह बाग दान देते हुए इसकी चार दीवारी अपने द्वारा कराने का संकल्प किया। इस बाग में आम, अमरूद, केला, बड़हर आदि के वृक्ष हैं। समय-समय पर संगत की ओर से और भी पौधे लगाये गये हैं। यहां पर वैशाख सुदी सप्तमी के दिवस को हर वर्ष बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है। इस पर्व का विशेष महत्त्व यह है कि इस दिन श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की अपने पिता-गुरु श्री गुरु तेग बहादर साहिब से पहली बार मुलाकात हुई बतायी जाती है। इस जगह पर ये वस्तुएं दर्शनीय हैं :-

१. थड़ा साहिब, जिस पर गुरु जी विराजमान थे
२. नीम का वृक्ष
३. कुआं

गुरुद्वारा हांडी साहिब : गुरुद्वारा हांडी साहिब तख़्त साहिब से लगभग २० किलोमीटर की दूरी पर दानापुर में स्थित है। गुरु जी ने अपने बालपन के लगभग ७ वर्ष पटना साहिब में बिताकर पंजाब जाते समय पहला पड़ाव दानापुर में किया था। यहां पर एक वृद्ध माई, जिसका नाम माता जमुना देवी बताया जाता है, के छोटे-से घर को पवित्र किया था। माता जमुना देवी ने गुरु जी के आने की याद में खिचड़ी बनाई थी।

तख़्त श्री हरिमंदर जी, पटना साहिब में निम्नांकित वस्तुएं दर्शनीय हैं :-

१. श्री गुरु ग्रंथ साहिब, जिस पर श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने तीर की नोक से केसर के साथ मूल-मंत्र का पाठ लिखा है। इसके दर्शन गुरुपर्व, संक्रांति आदि दिनों में करवाये जाते हैं।
२. छवि साहिब, श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का युवावस्था का आयल पेंट से तैयार किया हुआ एक चित्र।
३. पंगूड़ा साहिब। चार पांव का छोटा झूला। अभी सोने की प्लेटों से मढ़ा हुआ है। इस पर गुरु जी बचपन में बैठा करते थे।
४. छोटी सेफ। गुरु जी की छोटी कृपाण जो वे बालपन में पहना करते थे।
५. गुरु जी की गुलेल की गोली।
६. गुरु जी के बालपन के चार तीर।
७. लोहे की छोटी चकरी, जो गुरु जी अपने केशों में धारण किया करते थे।
८. लोहे का खंडा, जो गुरु जी दसतार में सजाया करते थे।
९. छोटा खंजर, जो गुरु जी कमरकस्से में धारण किया करते थे।
१०. चंदन की लकड़ी का कंघा, जिससे गुरु जी केश साफ किया करते थे।
११. लोहे के दो चक्र, जो गुरु जी दसतार में सजाया करते थे।
१२. हाथी दांत की बनी खड़ाऊं।
१३. श्री गुरु तेग बहादर साहिब की संदल की लकड़ी की खड़ाऊं का एक जोड़ा।
१४. भक्त कबीर जी की खड्डी, जिससे वे कपड़ा बुना करते थे।
१५. श्री गुरु तेग बहादर साहिब, श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी तथा माता सुंदरी जी के हुकमनामे की एक प्रति।
१६. गुरु जी का चोला।
१७. माता गुजरी जी का कुआं।
१८. एक इंच साइज़ में श्री गुरु ग्रंथ साहिब की बीड़।
१९. निशान साहिब की ८० फीट लंबी साल की लकड़ी, जो महाराजा नेपाल ने दी थी।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में अहंकार-निषेध का संकल्प

-डॉ. नवरत्न कपूर*

मनोविकारों के नाम : मनुष्य के मन को बिगाड़ने वाले भाव को 'मनोविकार' कहा जाता है, जिनकी संख्या पांच बताई जाती है। इनके नामों का उल्लेख श्री गुरु अमरदास जी ने निम्नलिखित पद में किया है :

इसु देही अंदरि पंच चोर वसहि कामु क्रोधु लोभु मोहु अहंकारा ॥
अंम्रितु लूटहि मनमुख नही बूझहि कोइ न सुणै पूकारा ॥
अंधा जगतु अंधु वरतारा बाझु गुरू गुबारा ॥
(पन्ना ६००)

अर्थात् इस देह में पांच चोर बसे हुए हैं। इन (विकारों) के नाम हैं-- काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार। ये मनोविकार मन की निर्मलता को लूट लेते हैं। गुरुदेव की शरण न लेने वाले और मनमर्ज़ी के काम करने वाले (मनमुख) इस बात को नहीं समझते, भले ही इन्हें कितनी बार पुकारकर समझाया जाए। वास्तव में मनोविकारों से ग्रस्त लोग अंधे होते हैं, जो कि गुरुदेव के बिना गवारों की तरह काम करते हैं।

अहंकार के पर्याय : श्री गुरु ग्रंथ साहिब में 'अहंकार' शब्द के अतिरिक्त उसके पर्यायवाची शब्दों का प्रयोग भी खूब हुआ है। अक्षर-क्रम अनुसार उदाहरण प्रस्तुत हैं :

१. आपु : यह शब्द प्राय: सभी भाषाओं में प्रयुक्त होता है किंतु श्री गुरु ग्रंथ साहिब में इसका प्रयोग 'अहंकार' के अर्थ में किया है :

आपु गइआ भ्रमु भउ गइआ जनम मरन दुख जाहि ॥
गुरमति अलखु लखाईऐ ऊतम मति तराहि ॥
नानक सोहं हंसा जपु जापहु त्रिभवण तिसै समाहि ॥
(पन्ना १०९३)

अर्थात् मनुष्य का अभिमान दूर हो जाने पर उसके सारे भ्रामक भाव नष्ट हो जाते हैं और वह बार-बार के जन्म-मरण के दुख से छूट जाता है। जिस व्यक्ति की बुद्धि उत्तम होती है, उस गुरु-भक्त (गुरमुख) को निराकार प्रभु के दर्शन हो जाते हैं। श्री गुरु नानक देव जी फरमान करते हैं कि ऐसे गुरु-भक्त 'सोहं-सोहं' का जप करते हैं, जिसमें तीनों लोकों का भक्ति-भाव समाया हुआ है।

२. अभिमान : यह संस्कृत-मूलक शब्द है। इसका उदाहरण निम्नलिखित है :

तजि अभिमानु सरणी परउ हरि गुण निधि पाई ॥ . .
नानक कउ प्रभ दइआ करि दास चरणी लागउ ॥
(पन्ना ७४५)

अर्थात् जो मनुष्य अभिमान त्यागकर गुरुदेव की शरण में जाकर उसे भगवान की भांति गुणों का भंडार (हरि-गुण-निधि) मानकर उसकी चरण-रज लेता है, ऐसे दास पर प्रभु दया करते हैं।

३. अहंमेव : संस्कृत-मूलक इस शब्द में 'अहं+एव' का संधि रूप है, जिसका अर्थ है-- "मैं भी।" इसका उदाहरण निम्नलिखित है :

अहंमेव मूठो बेचारा ॥
अनिक दोख अरु बहुतु सजाई ॥
ता की कीमति कहणु न जाई ॥ (पन्ना १००५)

अर्थात् अहंकारग्रस्त (अहंमेव मूठो) बेबस व्यक्ति अनेक बुरे काम करता है। उसे खूब

*१६९७, जीवन संत कॉटेज, देवान मूल चंद स्ट्रीट, नज़दीक आर्य समाज, पटियाला-१४७००१ (पंजाब)

सज़ा मिलती है और उसे जो कीमत चुकानी पड़ती है उसके बारे में कुछ भी कहा नहीं जा सकता।

४. गरब : यह संस्कृत शब्द 'गर्व' का पंजाबी रूप है। इसका प्रयोग निम्नलिखित पद में हुआ है :

बिनु जगदीस न राखै कोई ॥
बिनु गुर गरबु न मेटिआ जाइ ॥ (पन्ना २२५)

अर्थात् जगत के स्वामी (जगदीस) अर्थात् ईश्वर के बिना कोई भी जीवों का रक्षक नहीं है। इसी प्रकार गुरु की शरण लिए बिना मनुष्य के गरब (अहंकार) का नाश नहीं होता।

५. गुमान : यह फारसी का शब्द है, जिसका अर्थ 'अभिमान' या 'घमंड' है। श्री गुरु अरजन देव जी ने इस शब्द का प्रयोग निम्नलिखित पद में किया है :

बिसटा असत रकतु परेटे चाम ॥
इसु ऊपरि ले राखिओ गुमान ॥ (पन्ना ३७४)

अर्थात् मनुष्य की चमड़ी (चाम) के नीचे पेट में टट्टी, पेशाब और खून (रकतु) भरा रहता है। इस की दुर्गंधि के बावजूद मनुष्य शरीर पर अभिमान करता है।

६. हउ : 'हउ' का अर्थ है-- 'मैं'। इसका प्रयोग श्री गुरु रामदास जी ने 'अभिमान' के अर्थ में भी किया है, यथा :

हउ रोगु बिआपै चुकै न भंगा ॥
काम क्रोध अति त्रिसन जरंगा ॥
सो मुकतु नानक जिसु सतिगुरु चंगा ॥
(पन्ना १३०५)

अर्थात् अभिमान रूपी रोग भांग के नशे की तरह चढ़ जाने पर दूर नहीं होता है। प्रत्युत इसके साथ-साथ मनुष्य के काम-वासना, क्रोध और तृष्णा रूपी विकार बढ़ते रहते हैं। जिस व्यक्ति पर सद्गुरु के उपदेश का प्रभाव होता है, उसे ही इन (विकारों) से छुटकारा मिल सकता है।

७. हउमै : 'हउ' शब्द में 'मैं' शब्द की संधि (हउ+मै) होने से बने शब्द का अर्थ है-- 'मैं-मैं'। श्री गुरु नानक देव जी के निम्नलिखित पद से ये दोनों अर्थ स्पष्ट हो जाते हैं :

हउ हउ करत नही सचु पाईऐ ॥
हउमै जाइ परम पदु पाईऐ ॥ (पन्ना २२६)

अहंकार का मानव-मन पर प्रभाव : अहंकारी व्यक्ति अज्ञानी होता है। इस संदर्भ में श्री गुरु नानक देव जी का कथन है :

हउमै बूझै ता दरु सूझै ॥
गिआन विहूणा कथि कथि लूझै ॥
नानक हुकमी लिखीऐ लेखु ॥
जेहा वेखहि तेहा वेखु ॥ (पन्ना ४६६)

अर्थात् अभिमानग्रस्त व्यक्ति ज्ञान-रहित होने के कारण दर-दर (न जाने कहां-कहां) भटकता है। यदि उसे अपने अभिमान का पता चल जाए तो उसे गुरु के द्वार (दरु) का आभास हो सकता है। भगवान ने उसके भाग्य में यही अज्ञानता रूपी भटकन लिखी है। (इसे जानना और जानकर सद्मार्ग पर चलते रहना ही मानव जीवन का ध्येय है।) मैंने जैसा देखा है उसी का उल्लेख कर दिया है।

अहंकार-अंध (अज्ञानी) व्यक्ति के पागलपन की ओर संकेत करते हुए श्री गुरु अरजन देव जी ने फरमान किया है :

काम क्रोधि अहंकारि फिरहि देवानिआ ॥ . .
बिनु पूरे गुरदेव फिरै सैतानिआ ॥ (पन्ना ७०८)

अर्थात् अहंकारी व्यक्ति कामुक तथा क्रोधी बन जाता है और पागलों (देवानिआ) की तरह भटकता है। उसकी ये शैतानियां (सैतानिया) तब तक दूर नहीं हो सकतीं, जब तक उसे ज्ञान संपन्न (पूरे) गुरुदेव की शरण न मिल जाए।

अत्यंत अभिमानी व्यक्ति का पूजा-पाठ भी निरर्थक है। इस संबंध में श्री गुरु अरजन देव जी के मनोहर वचन उद्धृत हैं :

मन महि क्रोधु महा अहंकारा ॥
पूजा करहि बहुतु बिसथारा ॥

करि इसनानु तनि चक्र बणाए ॥
अंतर की मलु कब ही न जाए ॥ (पन्ना १३४८)

अर्थात् अत्यंत अभिमानी और क्रोधी मन वाला व्यक्ति भले ही स्नान करने के पश्चात कितना भी पूजा-पाठ और योगासन (चक्र बणाए) कर ले, उसके हृदय में व्याप्त मैल कभी नहीं निकलती।

अहंकारी व्यक्ति जन्म-मरण के चक्कर में फंसा रहता है :

हे जनम मरण मूलं अहंकारं पापातमा ॥
मित्रं तर्जति सत्रं द्रिड़ंति अनिक माया बिस्तीरनह ॥
(पन्ना १३५८)

अर्थात् अहंकारी व्यक्ति अत्यंत पापी होता है। वह अपनी धन-संपत्ति जीवन भर बढ़ाने में लगा रहता है। इसके फलस्वरूप उसके मित्र उसे (ईर्ष्यावश) छोड़ जाते हैं और उसके शत्रुओं की गिनती बढ़ती जाती है। ऐसा व्यक्ति जन्म-मरण के चक्कर से छुटकारा पाने में असमर्थ रहता है।

अहंकार-निवृत्ति का साधन और विनम्रता : गुरु की शरण लेने और सेवा करने से मनुष्य अहंकार से छुटकारा पा सकता है :

गुर की सेवा सबदु वीचारु ॥
हउमै मारे करणी सारु ॥
जप तप संजम पाठ पुराणु ॥
कहु नानक अपरंपर मानु ॥ (पन्ना २२३)

अर्थात् मनुष्य भले ही जप-तप करे या पुराणों का पाठ करे किंतु उसके मन को टिकाव (संजम) गुरु की सेवा में पहुंचकर आता है। नाम-सिमरन (सबदु) के उपदेश पर भली प्रकार विचार करने से उसके अभिमान का नाश हो सकता है। इससे (संसार में) उसे अत्यंत सम्मान मिलता है।

इसी संदर्भ में श्री गुरु अमरदास जी के मनोहर वचन पेश हैं :

से जन सचे निरमले जिन सतिगुर नालि पिआरु ॥
सतिगुर का भाणा कमावदे बिखु हउमै तजि विकारु ॥ (पन्ना ६५)

अर्थात् वे लोग सच्चे और निर्मल हृदय वाले होते हैं, जो सद्गुरु से प्रेम करते हैं। उसके कथन के अनुसार चलकर वे अपनी जीवन-शैली (भाणा कमावदे) चलाते हैं। इसका कारण यही होता है कि (गुरु की शरण लेने से) उनको अभिमान रूपी विषैले विकार से छुटकारा मिल जाता है।

श्री गुरु अरजन देव जी ने अभिमान त्यागकर विनम्रता धारण करने वालों की प्रशंसा निम्नलिखित पदों में की है :

सुखी बसै मसकीनीआ आपु निवारि तले ॥
बडे बडे अहंकारीआ नानक गरबि गले ॥
(पन्ना २७८)

आपस कउ जो जाणै नीचा ॥
सोऊ गनीऐ सभ ते ऊचा ॥ (पन्ना २६६)

अर्थात् विनम्र व्यक्ति (का सिर) सदा सबके आगे (निवारि तले) झुकता है। उसके सामने बड़े-बड़े अहंकारियों का अभिमान समाप्त हो जाता है। जो मनुष्य अपने आपको निम्न (नीचा) समझता है, उसे ही सबसे ऊंचा समझना चाहिए।

गुरुदेव की कृपापूर्ण शिक्षा से ही विनम्र व्यक्ति सदा सुखी रहता है :

करि किरपा जिस कै हिरदै गरीबी बसावै ॥
नानक ईहा मुकतु आगै सुखु पावै ॥
(पन्ना २७८)

अर्थात् (गुरुदेव के उपदेश से) जिसके हृदय में गरीबी (नम्रता) बस जाए, वह इस जीवन में भी मुक्त हो जाता है और आगे (प्रभु-दरगाह में) भी सुखी रहता है।

श्री गुरु तेग बहादर साहिब की बाणी की विशेषताएं

*-डॉ. चंचल बाला**

काव्य की गरिमा अनुभूति की अभिव्यक्ति पर निर्भर करती है। इस अनुभूति की अभिव्यक्ति में जितनी सच्चाई, स्पष्टता, सहजता, ईमानदारी और प्रभावोत्पादकता होगी उतना ही काव्य का रूप उज्ज्वल होगा। श्री गुरु तेग बहादर साहिब की बाणी भी अनुभूति की सच्चाई तथा सहजता को आत्मसात किए हुए है। गुरु जी ने अपने घोर-चिंतन, देशव्यापी पर्यटन तथा नाम-साधना से जीवन में से जो कुछ अनुभव किया, उसी की अभिव्यक्ति अपनी बाणी में की।

नवम् गुरु श्री गुरु तेग बहादर साहिब बहुमुखी एवं विलक्षण प्रतिभा के स्वामी थे। उनके व्यक्तित्व के अनुरूप उनकी बाणी भी विविध विषयों को लिए हुए है। उनकी बाणी विशेष भावमय गरिमा की पोषक है। सहजता, सरलता, सरसता, मार्मिकता, प्रेषणीयता एवं शक्ति, पद रचना का लालित्य माधुर्य, बिम्बों एवं प्रतीकों की कलात्मकता उनकी बाणी-रचना की विशेषताएं हैं जो उन्हें एक विशिष्ट व्यक्तित्व प्रदान कर देती हैं। उनकी बाणी में जहां एक ओर वैराग्य, संसार की नश्वरता, भगवत्-भक्ति आदि की अभिव्यक्ति हुई है, वहीं पर वह नैतिक एवं सामाजिक मूल्यों का उद्घाटन भी करती है। उनकी बाणी के अन्यान्य गुण हमारे अध्ययन के केंद्र बिंदु बने हैं। गुरु जी ने कई विषयों को अपनाकर मानव जीवन का मार्गदर्शन किया है।

गुरु जी की बाणी वैराग्य तथा त्याग की बाणी है। उन्होंने १५ रागों-- गउड़ी, आसा, देवगंधारी, बिहागड़ा, सोरठि, धनासरी, जैतसरी, टोडी, तिलंग, बिलावल, रामकली, मारू, बसंत, सारंग तथा जैजावंती में बाणी उच्चारण की। कुल ५९ शबद और ५७ सलोक हैं। इन सभी में वैराग्य की ध्वनि गुंजायमान हो रही है। यद्यपि पहले गुरुओं की बाणी में भी यह संकेत मिलता है परंतु श्री गुरु तेग बहादर साहिब की सारी की सारी बाणी इसी संदेश से परिपूर्ण है कि संसार की प्रीति झूठी है, यह दुनिया स्वप्न के सामान है, एकमात्र भगवान ही सत्य है, उसी से प्रीति करनी चाहिए :

जग रचना सभ झूठ है जानि लेहु रे मीत ॥
कहि नानक थिरु ना रहै जिउ बालू की भीति ॥
(पन्ना १४२९)

उन्होंने संसार के प्रति उदासीन रहकर ईश्वर में ध्यान केंद्रित करने का उपदेश दिया। सुख-दुख से ऊपर उठने का संदेश देकर मुक्तावस्था प्राप्त करने को कहा :

हरखु सोगु जा कै नही बैरी मीत समानि ॥
कहु नानक सुनि रे मना मुकति ताहि तै जानि ॥
(पन्ना १४२७)

गुरु जी की बाणी में स्थान-स्थान पर मानवीय संबंधों को मिथ्या बताया गया है और इनका त्याग कर ईश्वर-नाम-सिमरन को श्रेयस्कर बताया है :

साधो इहु जगु भरम भुलाना ॥
राम नाम का सिमरनु छोडिआ माइआ हाथि बिकाना ॥ *(पन्ना ६८४)*

गुरु जी कहते हैं कि संसार का नियम यही है। धन-दौलत और संसार से इकट्ठा किया हुआ

**अस्सिटेंट प्रोफेसर, हिंदी विभाग, खालसा कॉलेज फॉर वुमेन, श्री अमृतसर-१४३००१*

कुछ भी मानव के साथ नहीं जाता :

धनु दारा संपति ग्रेह ॥
कछु संगि न चालै समझ लेह ॥ (पन्ना ११८७)

गुरु जी विवेकहीन प्राणी को उपदेश देते हैं कि इस नाशवान और अस्थिर संसार की प्रत्येक वस्तु अस्थिर एवं निस्सार है। भगवद्-भक्ति संसार में स्थायी है, गुरु जी उसको अपनाने पर ज़ोर देते हैं। राम (प्रभु) के नाम से प्रेम करने पर जीवन सार्थक होता है :

म्रिग त्रिसना जिउ जग रचना यह देखहु रिदै बिचारि ॥
कहु नानक भजु राम नाम नित जा ते होत उधार ॥ (पन्ना ५३६)

गुरु जी की बाणी में वैराग्य मुख्य विषय रहा है। वैराग्यमय दृष्टिकोण उनकी बाणी में साफ झलकता प्रतीत होता है। संसार के प्रति अनासक्ति ही वैराग्यमय जीवन-यापन के लिए प्रेरित करती है।

गुरु जी वैराग्य एवं अनासक्ति के भाव को अपनाते हुए मनुष्य को संदेश देते हुए कहते हैं कि यह संसार स्वप्न के समान असत्य, अस्थिर और अस्तित्वहीन है। यहां पर श्री रामचंद्र जी और रावण भी मृत्यु के भयंकर एवं प्रलयकारी हाथों से न बच सके। उनका उदाहरण देते हुए गुरु जी फरमान करते हैं :

रामु गइओ रावनु गइओ जा कउ बहु परवारु ॥
कहु नानक थिरु कछु नही सुपने जिउ संसारु ॥ (पन्ना १४२९)

श्री गुरु तेग बहादर साहिब की बाणी प्रभु-महिमा एवं सतसंगत की महिमा का निष्ठापूर्ण वर्णन करती हुई सांसारिक विषय-विकारों, माया, मिथ्या जगत आदि का खंडन करके संसार की नश्वरता एवं मिथ्यात्व, मोह, लोभ, अहं आदि की निरर्थकता का अवबोधन कराती है। नि:संदेह वैराग्य का नया दृष्टिकोण उनकी अनुभूति और उनकी उदार दृष्टि का परिचायक है। उनके लिए वैराग्य निष्क्रियता अथवा पलायन नहीं है और न ही निराशा अथवा उदासीनता का परिचायक है। वह विशुद्ध धर्माचरण की सतत् प्रेरणा है।

नवम् गुरु जी ने बाणी में मन को चंचल तथा अस्थिर बताया है। उनका मानना है कि मानव वासनाओं एवं इंद्रियों के वश में रहकर मनमुख बन सकता है। मनमुख शाक्त एवं माया-उपासक है क्योंकि वह हरि की भक्ति के रस से परिचित नहीं है। मनमुख प्राणी विषय-वासनाओं पर आसक्त रहता है। गुरमुख जीव इंद्रियों को अपने वश में रखता है और प्रभु की कृपा को प्राप्त करता है। परमात्मा की कृपा का दान प्राप्त होने पर वह अहं से मुक्त हो जाता है और अहं से विलग्न होने पर जीव का प्रभु से साक्षात्कार हो जाता है। प्रभु से साक्षात्कार होने पर उसके मन में विषय-वासनाओं के प्रति आकर्षण एवं मोह समाप्त हो जाता है।

श्री गुरु तेग बहादर साहिब ने अपनी बाणी में प्राणी को माया से छुटकारा पाने के लिए इंद्रियों पर विजय पाने की प्रेरणाा दी है। उनका मानना है कि इंद्रियों पर विजय पाने के लिए अभ्यास की आवश्यकता है और यह अभ्यास ही वैराग्य को जन्म देता है। गुरु जी मानव को चेतावनी देते हुए कहते हैं कि अगर तुझे सुख की प्राप्ति चाहिए तो विषय-वासनाओं से मुक्त करने वाले प्रभु की शरण में जा क्योंकि मानव-जीवन दुर्लभ है :

जउ सुख कउ चाहै सदा सरनि राम की लेह ॥
कहु नानक सुनि रे मना दुरलभ मानुख देह ॥ (पन्ना १४२७)

गुरु जी ने मनुष्य को बार-बार प्रभु का गुणगान करने की प्रेरणा दी है। प्रभु का स्मरण करने से सब दुख दूर हो जाते हैं और

जीवन सफल होता है :

साधो गोबिंद के गुन गावउ ॥
मानस जनमु अमोलकु पाइओ बिरथा काहि गवावउ ॥ (पन्ना २१९)

मन को विषय-वासनाओं से मुक्त करने वाला तथा जिह्वा से प्रभु के नाम का स्मरण करने वाला व्यक्ति अनायास ही अपने जन्म को सफल बना लेता है :

सुफलु जनमु नानक तब हूआ जउ प्रभ जस महि पागिओ ॥ (पन्ना १००८)

श्री गुरु तेग बहादर साहिब ने अपनी बाणी में अव्यक्त सत्ता को स्वीकार किया है। गुरु जी ने प्रभु को सर्वव्यापी और सदा अलेपा कहा है। वह निर्गुण, निराकार तथा निरंजन होकर सार्वभौम और साकार है। प्रभु की सत्ता एवं सामर्थ्य का आभास हमें सृष्टि की प्रत्येक कृति से होता है। गुरु जी बाणी में अव्यक्त सत्ता के महत्त्व को सर्वोपरि मानते हुए कहते हैं कि हमें सुख और शांति मात्र प्रभु की शरण में जाने पर ही मिल सकती है :

साधो राम सरनि बिसरामा ॥ (पन्ना २२०)

गुरु जी प्रभु के नाम के अतिरिक्त सारे संसार को मिथ्या मानते हैं। गुरु जी भ्रम में फंसे मनुष्य को उपदेश देते हुए कहते हैं कि हम प्रभु के गुणों का गान करके और उसके पवित्र नाम को कानों से सुनकर जीवन सार्थक बना सकते हैं :

जिहबा गुन गोबिंद भजहु करन सुनहु हरि नामु ॥
कहु नानक सुनि रे मना परहि न जम कै धाम ॥ (पन्ना १४२७)

श्री गुरु तेग बहादर साहिब ने अपनी बाणी में समस्त संसार को नश्वर एवं झूठा कहा है। उनका मानना है कि राजा और रंक दोनों को काल के वश में पड़ना पड़ता है। हमें सृजन के साथ-साथ विनाश को भी स्वीकार करना चाहिए :

इकि बिनसै इक असथिरु मानै अचरजु लखिओ न जाई ॥ (पन्ना २१९)

गुरु जी अपनी बाणी में मनुष्य को सतर्क करते हुए कहते हैं कि उसे संसार के समस्त जंजालों से मुक्त होकर प्रभु के गुणों का गान करना चाहिए। कुदरत का यह नियम अटल है कि जन्म के बाद मृत्यु अवश्य आती है। संसार का अस्तित्व पानी के बुलबुले के समान है जो पल में बनता और फूटता है। गुरु जी जीव को प्रभु की शरण में जाने और नाम-सिमरन करने की शिक्षा देते हैं।

श्री गुरु तेग बहादर साहिब ने अपनी बाणी में हृदय की समावस्था को बनाये रखने पर विशेष बल दिया है और ऐसे व्यक्ति को ज्ञानी एवं गुरमुख कहा है। उनका मानना है कि समावस्था को प्राप्त व्यक्ति गुरमति से जान-पहचान कर लेता है और सहजावस्था को प्राप्त कर लेता है। यही सहजावस्था उसका प्रभु से मिलन करवा देती है। इसी बल पर वह स्वयं से साक्षात्कार कर लेता है और मन में बसी कालिमा को क्षण भर में खत्म कर सकता है :

बाहरि भीतरि एको जानहु इहु गुर गिआनु बताई ॥
जन नानक बिनु आपा चीनै मिटै न भ्रम की काई ॥ (पन्ना ६८४)

श्री गुरु तेग बहादर साहिब ने अपनी बाणी में मनुष्य को मन से माया के प्रति मोह को दूर करने की सलाह दी है और कहा है कि जो मनुष्य ऐसी स्थिति को प्राप्त कर लेता है वह ऐसी अवस्था में पहुंच जाता है जहां वह लोहे और सोने, हर्ष और शोक, शत्रु और मित्र, स्तुति और निंदा आदि को एक समान समझता है। वह संसार में मुक्त होकर विचरण करता है। उसे न किसी का डर होता है और न ही किसी के

लिए वह भय का कारण बनता है। गुरु जी के अनुसार ऐसे प्राणी को ही 'पदु निरबाना' की प्राप्ति होती है :

उसतति निंदा दोऊ तिआगै खोजै पदु निरबाना ॥
पन्ना २१९)

श्री गुरु तेग बहादर साहिब ने अपनी बाणी में भगवद्-कृपा-प्राप्ति को मानव का ध्येय बतलाया है। उनका कहना है कि जिस मनुष्य ने अपने मन से प्रभु के नाम को बिसार दिया है उसके लिए तीर्थ-स्नान आदि सब व्यर्थ हैं। गुरु जी मानते हैं कि प्रभु का नाम सभी प्रकार के दुखों को दूर करने वाला है, दुर्बुद्धि का विनाश करने वाला है और मोक्ष की प्राप्ति में सहायक होता है :

रे मन ओट लेहु हरि नामा ॥
जा कै सिमरनि दुरमति नासै पावहि पदु निरबाना ॥ (पन्ना ९०१)

गुरु जी का विचार है कि जो मनुष्य अपने जीवन में भगवद्-कृपा रूपी प्रसाद ग्रहण कर लेता है, उस प्राणी और प्रभु में अंतर नहीं रहता :

जो प्रानी निसि दिनु भजै रूप राम तिह जानु ॥
हरि जन हरि अंतरु नही नानक साची मानु ॥
(पन्ना १४२७)

श्री गुरु तेग बहादर साहिब की बाणी में जहां अनुभूति की सत्यता के दर्शन होते हैं वहां भाव-प्रवणता की दृष्टि से भी यह उत्कृष्ट है। गुरु जी की बाणी कल्पना और यथार्थ की दृष्टि से भी उत्कृष्ट है। गुरु जी की बाणी कल्पना और यथार्थ की दृष्टि से महिमा-मंडित है।

सारांशत: नवम् गुरु जी की बाणी में भाव-सौंदर्य, संदेश की महत्ता तथा प्रभावशीलता का तनिक भी अभाव नहीं है। महिमाशाली व्यक्तित्व वाले श्री गुरु तेग बहादर साहिब की चेतना चिरंतन, शाश्वत एवं सार्वभौमिक है।

बाबा दीप सिंघ जी शहीद

(पृष्ठ २१ का शेष)

सिंघ जी दुनिया की अद्भुत एवं निराली लड़ाई लड़ने का अद्वितीय करिश्मा दिखाते हुए, वैरियों को खदेड़ते हुए श्री हरिमंदर साहिब की परिक्रमा तक जा पहुंचे। यहां तक पहुंचते-पहुंचते अन्य पठान सेनापतियों में से साबर अली ख़ान, रुस्तम अली ख़ान तथा ज़बरदस्त ख़ान भी मारे गए। बाबा जी का साथ उनके स्वाभिमानी साथी भाई हीरा सिंघ एवं भाई बलवंत सिंघ दे रहे थे।

जब इतने अधिक मुगल सेनापति मारे गए तो पठानी, अफगानी व मुगल फौज के हौसले पूरी तरह से टूट गए। वे सभी श्री हरिमंदर साहिब का घेरा छोड़ भाग खड़े हुए। बाबा दीप सिंघ जी शूरवीरों की तरह 'शीश हाथ पर रख कर' लड़े। बाबा दीप सिंघ जी अद्वितीय साहस का पराक्रम दिखाकर श्री हरिमंदर साहिब की परिक्रमा में शहादत का जाम पीकर परम पिता प्रभु के चरणों में जा विराजमान हुए। शेष सिंघों ने विरोधी सेनाओं का अटारी तक पीछा किया और श्री हरिमंदर साहिब के अपमान के बदले में उन्हें सख़्त सबक सिखाया। बचे-खुचे मुगल अपने शस्त्र-भंडार छोड़ नौ दो ग्यारह हो गए।

बाबा दीप सिंघ जी की आयु का वृद्ध सेनापति, जांबाज़ योद्धा, अदम्य साहस वाला शूरवीर, बहादुर विश्व इतिहास में अन्य कोई नहीं मिलता। उनकी लामिसाल शहादत की उदाहरण कहीं नहीं मिलती।

बाबा दीप सिंघ जी की याद में उनकी यादगार श्री हरिमंदर साहिब की परिक्रमा में स्थापित है। जहां उनका अंतिम संस्कार किया गया वहां गुरुद्वारा शहीदगंज साहिब चाटीविंड गेट के पास सुशोभित है।

कविता

मित्र प्रकृति पर प्रहार

*-श्री प्रशांत अग्रवाल**

कहने को करते विकास हम, किंतु असल में गिरते हैं।
जिन पर है अस्तित्व हमारा, वे आधार ही डिगते हैं।
प्रकृति तो है मित्र हमारी, फिर क्यों चाहें उस पर जय ?
दाता पर ही कर प्रहार हम, बने कृतघ्न और निर्दय।
धरा हमारी अन्न उगाकर, मां की भांति पोषण करती।
खाद रसायन डाल के हमने, मां की छाती ज़हर से भर दी।
धरती माता को हमने ही, तरु-वसनों से हीन किया।
जो लेना था बरसों में हमने, एक दिन में छीन लिया।
इस कुदरत ने वृक्ष-रूप में, शुद्ध हवा दी, छाया दी।
जल-स्तर न गिरने दिया और फल, लकड़ी हरियाली दी।
उन वृक्षों को काट के हमने, अपने पैर कुल्हाड़ी मारी।
जिस शाखा पर बैठे हैं हम, चला रहे उस पर आरी।
जिन नदियों ने लगातार बहकर, हम सबकी प्यास बुझाई।
पोषक-तत्वों को लाकर, मिट्टी की उर्वरता विकसाई।
उन नदियों को मानव ने, ऊंचे बांधों से बांध दिया।
गंदे नाले खोल नदी में, अपना अनहित खूब किया।
जो वायु सांसों में भरकर, ज़िंदा हमको रखती है।
मस्त बयार सुगंधित होकर, उत्स मनों में भरती है।
जीवनदायी उस वायु को, हम ज़हरीला करते हैं।
खूब प्रदूषण फैलाते, अपने ही शत्रु बनते हैं।
जिन औषधि-पौधों के कारण, हम बीमार न रहते थे।
कम खर्चे में चंगे होते, प्रति-प्रभाव न पड़ते थे।
अब उन औषधि-पौधों का, रक्षक कोई न दिखता है।
लुप्त विरासत होती है, समाज अपनों से लुटता है।
घटते वन गरमाये भूमि, चक्र प्रकृति का बिगड़े है।
सूखा फाड़े धरती को, कभी बाढ़ों से घर उजड़े है।
लाउडस्पीकर और मशीनें, चहुंदिश दिखती भाग-दौड़।
शोर बहुत परिवेश में फैला, नहीं शांति को कहीं ठौर।
यदि हम चाहें सच्चा सुख तो, बस इतना ही कहना है।
प्रकृति-मां की गोद में हमको, वापस जाकर रहना है।

**४०, बजरिया मोतीलाल, बरेली-२४३००३ (उ. प्र.); फोन : ९४११६०७६७२*

. . . सुपने जिउ संसारु ॥

-स. रणवीर सिंह*

रामु गइओ रावनु गइओ जा कउ बहु परवारु ॥
कहु नानक थिरु कछु नही सुपने जिउ संसारु ॥
(पन्ना १४२९)

नवम् पातशाह श्री गुरु तेग बहादर साहिब ने फरमाया है कि जिसने भी इस धरती पर जन्म लिया है, उसे मरना जरूर है। इस सृष्टि में कोई भी स्थिर नहीं। जो भी आया है उसे जाना ही है। यही दस्तूर है इस मायावी संसार का, बेशक वे मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम हों या बलशाली रावण। यह संसार सपने की तरह चलचित्र है।

गुरबाणी में भक्त रविदास जी कहते हैं कि शरीर रूपी पिंजरे में जीवात्मा रूपी पक्षी कैदी के रूप में निवास करता है :

जल की भीति पवन का थंभा रकत बुंद का गारा ॥
हाड मास नाड़ी को पिंजरु पंखी बसै बिचारा ॥
(पन्ना ६५९)

भक्त रविदास जी का एक अन्य फरमान है जिसमें जीव को 'माटी का पुतला' संबोधित कर उसकी हालत बयां कर रहे हैं :

माटी को पुतरा कैसे नचतु है ॥
देखै देखै सुनै बोलै दउरिओ फिरतु है ॥रहाउ॥
जब कछु पावै तब गरबु करतु है ॥
माइआ गई तब रोवनु लगतु है ॥ (पन्ना ४८७)

जीवन और मृत्यु एक सिक्के के दो पहलू हैं। जो पैदा हुआ है उसे एक न एक दिन मरना ही पड़ेगा। जीव का तन घास की टाटी के समान है। घास के समान यह तन जलकर माटी में मिल जाता है :

इहु तनु ऐसा जैसे घास की टाटी ॥
जलि गइओ घासु रलि गइओ माटी ॥
(पन्ना ७९४)

लोग रोज़ मर रहे हैं, यमलोक जा रहे हैं। यह सब जानते हुए भी जीवित लोग सोचते हैं कि उन्होंने कभी मरना ही नहीं। कबूतर बेशक अपनी आंखें मूंद कर बैठा रहे, पर बिल्ली उसे झपटा मारकर खा ही जाती है :

ऐसो इहु संसारु पेखना रहनु न कोऊ पईहै रे ॥ . . .
मानसु बपुरा मूसा कीनो मीचु बिलईआ खईहै रे ॥
(पन्ना ८६५)

गुरबाणी में तो यहां तक कहा गया है :

कूडु राजा कूडु परजा कूडु सभु संसारु ॥
कूडु मंडप कूडु माड़ी कूडु बैसणहारु ॥
कूडु सुइना कूडु रुपा कूडु पैन्हणहारु ॥
कूडु काइआ कूडु कपडु कूडु रूपु अपारु ॥
कूडु मीआ कूडु बीबी खपि होए खारु ॥
कूड़ि कूड़ै नेहु लगा विसरिआ करतारु ॥
(पन्ना ४६८)

यह पूरा विश्व मिथ्या है, भ्रम है, धोखा है, नाशवान है। न राजा, न प्रजा स्थिर है। ये महल, मंडप सब नाशवान हैं। इनमें रहने वाले को भी काल का ग्रास बनना है। सोना-चांदी, काया, कपड़ा सब के सब नश्वर हैं, नाशवान हैं;

(शेष पृष्ठ ४६ पर)

**मो-पो-- मांदी, तहसील नारनौल, ज़िला महेंद्रगढ़ (हरियाणा)*

गुरबाणी चिंतनधारा : ८७

सुखमनी साहिब : विचार व्याख्या

*-डॉ. मनजीत कौर**

संगि न चालसि तेरै धना ॥
तूं किआ लपटावहि मूरख मना ॥
सुत मीत कुटंब अरु बनिता ॥
इन ते कहहु तुम कवन सनाथा ॥
राज रंग माइआ बिसथार ॥
इन ते कहहु कवन छुटकार ॥
असु हसती रथ असवारी ॥
झूठा डंफु झूठु पासारी ॥
जिनि दीए तिसु बुझै न बिगाना ॥
नामु बिसारि नानक पछुताना ॥५॥

१९वीं असटपदी की पांचवी पउड़ी में श्री गुरु अरजन देव जी पावन फरमान करते हैं कि इस संसार की धन-दौलत तथा सगे-सम्बंधी कोई भी असल में जीव के साथ जाने वाला नहीं है। अज्ञानी जीव व्यर्थ ही इन प्रपंचों में फंसा पड़ा है। वह कभी भी ख़्याल नहीं करता कि जिसने यह सब दिया है उसको याद करना उसके जीवन का असल मकसद है तथा उसके नाम-सिमरन के बिना उसके पास केवल पछतावा ही शेष रह जाना है। दातें प्राप्त करके दातार पिता को भुलाने वाले मूर्ख जीव को गुरु पातशाह ने इस पउड़ी में समझाया है।

गुरु पंचम पातशाह पावन फरमान करते हैं कि हे मूर्ख मन! यह सांसारिक धन तेरे साथ जाने वाला हरगिज़ नहीं है। आखिर तू क्या सोचकर इसके साथ लिपटा हुआ है? जो धन-पदार्थ तेरे साथ जाने वाले नहीं हैं उनके साथ इतनी गहरी पकड़ क्यों बनाकर बैठे हो? पुत्र, मित्र, परिवार एवं औरत (दुनियावी रिश्ते) इनमें से तेरा साथ देने वाला कोई नहीं है। राजपाट, रंग-तमाशे तथा माया के प्रसार से कभी कोई छूट सका है भला! वास्तव में ये घोड़े, हाथी, रथ आदि सब झूठे आडंबर हैं तथा झूठ का ही प्रसार हैं। इन सबके होते हुए माया के प्रभाव से कौन छूट सका है? जिस दातार पिता परमेश्वर ने इतनी दातें बख़्शी हैं अर्थात् सब कुछ दिया है, अज्ञानी (मूढ़) जीव उसकी कद्र नहीं जानता। गुरु पातशाह अंतिम पंक्ति में स्पष्ट करते हैं कि समस्त दातें देने वाले प्रभु को भुलाकर मूर्ख मनुष्य केवल पछताता ही है।

उपरोक्त पउड़ी में गुरु पंचम पातशाह ने मूर्ख मन को चेतावनी दी है कि ये सांसारिक पदार्थ और भाई-बंधु असल में तेरे सच्चे साथी नहीं हैं। इनमें गलतान होकर तू सच्चे मालिक का नाम और उससे प्राप्त हुई रहमतें भुलाकर अंत में पछताएगा। फिर अवसर चूक जाने पर कुछ भी नहीं हो सकता। यह सर्वोत्तम मानव-जीवन उस दातें बख़्शने वाले को हर पल याद करने एवं उसका शुक्राना करने का है, लेकिन मूर्ख जीव उसकी बख़्शी हुई दातें प्राप्त करके दातार पिता को भुला देने की गुस्ताखी कर बैठता है। यह केवल एक बार नहीं बार-बार ऐसी गुस्ताखी करता है। गुरबाणी में इस संदर्भ में अन्यत्र भी बड़ा सुंदर ढंग से समझाया है कि किस प्रकार कृतज्ञता एवं कर्त्तव्य को भुलाकर

**२/१०४, जवाहर नगर, जयपुर-३०२००४, मो: ९९२९७-६२५२३*

मनुष्य सही कर्म न करता हुआ आजीवन भटकता ही रहता है। प्रभु-हुक्म को नहीं समझता। आवागमन के चक्कर में फंसा हुआ पछताता ही रहता है। गुरबाणी-प्रमाण है :

दाति पिआरी विसरिआ दातारा ॥
जाणै नाही मरणु विचारा ॥२॥
वसतु पराई कउ उठि रोवै ॥
करम धरम सगला ई खोवै ॥
हुकमु न बूझै आवण जाणे ॥
पाप करै ता पछोताणे ॥ *(पन्ना ६७६)*

गुरबाणी में जीव को बड़ी सहजता से समझाया गया है कि उसे ऐसे कर्म करने चाहिए जिससे उसे जीवन में पछताना न पड़े। दातार पिता को याद रखने से सारी कुलें भवसागर से पार उतर जाती हैं :

दातारु सदा दइआलु सुआमी काइ मनहु विसारीऐ ॥
मिलु साधसंगे भजु निसंगे कुल समूहा तारीऐ ॥
सिध साधिक देव मुनि जन भगत नामु अधारा ॥
बिनवंति नानक सदा भजीऐ प्रभु एकु करणैहारा ॥
(पन्ना ४६१)

सब कुछ करने-कराने में समर्थ उस दातार दयालु पिता को कभी न बिसारो। श्वास-श्वास उसका सिमरन और शुक्राना समस्त विघ्नों से बचाकर जीव को इस भवसागर से पार उतारने में सहायक सिद्ध होता है।

गुर की मति तूं लेहि इआने ॥
भगति बिना बहु डूबे सिआने ॥
हरि की भगति करहु मन मीत ॥
निरमल होइ तुम्हारो चीत ॥
चरन कमल राखहु मन माहि ॥
जनम जनम के किलबिख जाहि ॥
आपि जपहु अवरा नामु जपावहु ॥
सुनत कहत रहत गति पावहु ॥
सार भूत सति हरि को नाउ ॥
सहजि सुभाइ नानक गुन गाउ ॥६॥

१९वीं असटपदी की छठी पउड़ी में गुरु पंचम पातशाह जी ने जीव को समस्त चतुराइयां छोड़कर निर्मल भाव से प्रभु की भक्ति करने के लिए प्रेरित किया है और यह भी समझाया है कि नाम-सिमरन जैसा पुनीत कार्य स्वयं भी करना है तथा औरों से भी करवाना है। ईश्वर का नाम ही सार-तत्व है। इसी से परम पद की प्राप्ति मुमकिन है।

श्री गुरु अरजन देव जी पावन फरमान करते हैं कि हे अनजान जीव! तू सतिगुरु से शिक्षा ले और परमेश्वर की भक्ति कर। भक्ति के बिना अनेकों ही स्वयं को सूझवान समझने वाले भवसागर में डूब जाते हैं। हे प्यारे मीत मेरे मन! तू पारब्रह्म परमेश्वर की बंदगी कर। प्रभु की भक्ति की बदौलत तेरा मन पवित्र हो जायेगा। प्रभु के सुंदर चरण-कमलों को अपने हृदय-घर में पिरोकर रख। प्रभु के चरण कमलों को हृदय-घर में पिरोकर रखने की बदौलत तेरे जन्म-जन्मातरों के पाप नाश हो जायेंगे। परमेश्वर का पावन नाम तू खुद भी जप तथा औरों की भी जपने के लिए प्रेरित कर। प्रभु-नाम को सुनने, जपने एवं आचरण में उतारने से मुक्ति प्राप्त हो जायेगी। परमेश्वर का सच्चा नाम ही समस्त पदार्थों में सर्वोत्तम है। गुरु पातशाह अंतिम पंक्ति में मन को प्रबोधित करते हुए पावन फरमान करते हैं कि हे मेरे मन! तू सहज-भाव से प्रेमपूर्वक प्रभु का गुणगान कर।

वस्तुत: परमेश्वर का नाम ही जीवन का सार है बशर्ते उसे बिना किसी प्रपंच एवं चतुराई के सहज एवं निर्मल भाव से जपा जाए। जपु जी साहिब की पावन बाणी में भी श्री गुरु नानक देव जी ने स्पष्ट हिदायत की है कि जीव

के पास इस दुनिया में विचरण करते हुए हज़ारों ही चतुराइयां हों लेकिन उस प्रभु की दरगाह में उनमें से एक भी काम नहीं आती। वे सब यहीं धरी रह जाती हैं :

सहस सिआणपा लख होहि त इक न चलै नालि ॥ (पन्ना १)

भक्त कबीर जी की पावन बाणी भी सहज भाव से उस मालिक की भक्ति करने हेतु प्रेरित करती है। उन्होंने भी यही समझाया है कि जप, तप, व्रत, पूजा सब व्यर्थ हैं जब तक हृदय से द्वैत-भाव नहीं मिट जाता और चतुराइयों से ईश्वर को पाया नहीं जा सकता :

किआ जपु किआ तपु किआ ब्रत पूजा ॥
जा कै रिदै भाउ है दूजा ॥१॥
रे जन मनु माधउ सिउ लाईऐ ॥
चतुराई न चतुरभुजु पाईऐ ॥ . .
कहु कबीर भगति करि पाइआ ॥
भोले भाइ मिले रघुराइआ ॥ (पन्ना ३२४)

गुरबाणी में बार-बार निर्मल भाव से प्रभु-नाम जपना ही मनुष्य जीवन का असली मकसद एवं सर्वोत्तम कार्य बताया गया है।

गुन गावत तेरी उतरसि मैलु ॥
बिनसि जाइ हउमै बिखु फैलु ॥
होहि अचिंतु बसै सुख नालि ॥
सासि ग्रासि हरि नामु समालि ॥
छाडि सिआनप सगली मना ॥
साधसंगि पावहि सचु धना ॥
हरि पूंजी संचि करहु बिउहारु ॥
ईहा सुखु दरगह जैकारु ॥
सरब निरंतरि एको देखु ॥
कहु नानक जा कै मसतकि लेखु ॥७॥

१९वीं असटपदी की सातवीं पउड़ी में गुरु साहिब ईश्वर का गुणवान करने से प्राप्त होने वाले लाभ को बताते हुए कहते हैं कि प्रभु का गुणानुवाद अहंकार रूपी विष को नष्ट कर देता है। श्वास-ग्रास प्रभु-चिंतन से जीव सदैव चिंता-मुक्त रहेगा। चिंता-मुक्त व्यक्ति ही सदा सुखी रह सकता है। इसी भाव को दृढ़ करवाते हुए लोक-परलोक को सफल बनाने की युक्ति इस पावन पउड़ी में समझाई गई है।

पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी पावन फरमान करते हैं कि हे भाई! प्रभु का गुणगान करने से तेरी विकारों की मैल उतर जायेगी। केवल विकारों की मैल ही नहीं उतरेगी बल्कि अहंकार रूपी ज़हर का फैलाव भी नष्ट हो जायेगा। (परमेश्वर का नाम-सिमरन करने से) तू निश्चिंत होकर सुखों का भोग करेगा अर्थात् चिंता-मुक्त होकर आनंदपूर्वक विचरण करेगा। अत: तू श्वास-ग्रास प्रभु-नाम के साथ जुड़ा रह। हे मन! तू समस्त चतुराइयों को त्याग दे। सच्चे नाम रूपी धन की प्राप्ति केवल साधसंगत में ही हो सकती है। प्रभु-नाम की पूंजी का संग्रह और ईश्वर-भक्ति का व्यापार कर! ऐसा व्यापार करने से इस संसार में सुख मिलेगा तथा प्रभु की दरगाह में जय-जयकार होगी अर्थात् तुझे पूरा मान-सम्मान मिलेगा। हे प्राणी! तू समस्त जीवों में परमेश्वर को ही देख अर्थात् तुझे प्रत्येक में प्रभु ही व्याप्त दिखाई देगा। गुरु पातशाह अंतिम पंक्ति में फरमान करते हैं कि यह अवस्था उसी को नसीब होती है जिसकी तकदीर में धुर दरगाह से ऐसे लेख लिखे हों।

उपरोक्त पउड़ी में अनेक गूढ़ भावों के दर्शन होते हैं जैसे कि प्रभु का गुणगान करने से विकारों की मैल उतर जाती है। बाणी में अन्यत्र भी इसी भाव के दर्शन होते हैं। जपु जी साहिब में श्री गुरु नानक देव जी ने मार्गदर्शन किया है कि शरीर की (बाहरी) मैल धोने के

लिए जैसे साबुन की आवश्यकता है वैसे ही विकारों की मैल धोने में केवल ईश्चर का नाम ही सहायक सिद्ध होता है :

मूत पलीती कपड़ु होइ ॥
दे साबूणु लईऐ ओहु धोइ ॥
भरीऐ मति पापा कै संगि ॥
ओहु धोपै नावै कै रंगि ॥ *(पन्ना ४)*

साथ ही यह भी स्पष्ट किया है कि प्रभु की निर्मल भाव से बंदगी करनी है, समस्त चतुराइयों को दरकिनार करके। इंसान को व्यापारी मानते हुए गुरबाणी में (अनेक बार) सच्चा व्यापार करने की प्रेरणा दी गई है और वो व्यापार है :

वणजु करहु वणजारिहो वखरु लेहु समालि ॥
तैसी वसतु विसाहीऐ जैसी निबहै नालि ॥
अगै साहु सुजाणु है लैसी वसतु समालि ॥
(पन्ना २२)

जीव को सत्य का सौदा करना चाहिए। यही दरगाह में उसके साथ जा सकता है। इसी की बरकतें जीव के लिए लोक-परलोक में सहायक सिद्ध होंगी।

एको जपि एको सालाहि ॥
एकु सिमरि एको मन आहि ॥
एकस के गुन गाउ अनंत ॥
मनि तनि जापि एक भगवंत ॥
एको एकु एकु हरि आपि ॥
पूरन पूरि रहिओ प्रभु बिआपि ॥
अनिक बिसथार एक ते भए ॥
एकु अराधि पराछत गए ॥
मन तन अंतरि एकु प्रभु राता ॥
गुर प्रसादि नानक इकु जाता ॥८॥१९॥

१९वीं असटपदी की अंतिम पउड़ी में भी सर्वव्यापक, सर्वसमर्थ, परिपूर्ण परमेश्वर का जाप हृदय से करते रहने की प्रेरणा पंचम पातशाह जी ने कलयुगी जीवों को बख़्शी है। गुरु पातशाह पावन फरमान करते हैं कि हे जीव! एक ईश्वर का ही जाप (सिमरन) कर। एक प्रभु की महिमा (सिफत-सलाह) का गुणगान कर। एक की ही आराधना कर तथा एक की ही चाहत रख अर्थात् परमेश्वर को ही पाने की तमन्ना रख। एक प्रभु के ही गुण गायन कर। हृदय से तथा शारीरिक इंद्रियों से भी उसी का जाप कर अर्थात् जिह्वा से नाम जप, कानों से उसकी महिमा श्रवण कर, नेत्रों से देख, सिफत-सलाह की बाणी पढ़। तन-मन से परमेश्वर का नाम जप। सर्वत्र प्रभु आप ही आप व्याप्त है अर्थात् कण-कण में वह आप ही समाया हुआ है। वह परिपूर्ण प्रभु जर्रे-जर्रे में विद्यमान है। संसार का संपूर्ण विस्तार उसी एक ही प्रभु से हुआ है। परमेश्वर के गुण गाने से समस्त पाप विनिष्ट हो जाते हैं। वह मालिक ही तन-मन में बसा हुआ है। गुरु पातशाह अंतिम पंक्ति में स्पष्ट करते हैं कि जिसके तन-मन में प्रभु बसा हुआ है, उसी ने ही गुरु-कृपा से उस एक परमेश्वर को पहचान लिया है।

उपरोक्त पउड़ी में गुरु पातशाह ने अप्रत्यक्ष रूप से मोह और प्रेम के रहस्य को समझाया है। असल में मोहवश इंसान पाप-कर्म में प्रवृत्त होता है और उसमें इस कद्र गलतान हो जाता है कि उसे कुछ अच्छा सूझता ही नहीं। इसके विपरीत अविनाशी प्रभु से प्रेम करने के फलस्वरूप सारे पाप नाश हो जाते हैं। जहां सांसारिक सम्बंध अस्थिर एवं नाशवान हैं वहीं ईश्वरीय प्रेम सदा कायम रहने वाला है जो समस्त पापों का विनाश करता है।

चिंतकों के चिंतनानुसार एक तथ्य को और भी स्पष्ट करने का प्रयास किया जा सकता है कि मोह का दायरा सीमित है तथा

मोह में कहीं न कहीं स्वार्थ छिपा होता है। मोह में व्यक्ति किसी को कुछ देकर वापिस उससे पाने की ख्वाहिश रखता है और न मिलने पर दुखी होता है, पछताता है। दूसरी तरफ प्रेम नि:स्वार्थ होता है। प्रेम व्यापक होता है। प्रेम में मनुष्य सर्वस्व देकर भी कुछ वापिस पाने की चाहत नहीं रखता है। वास्तव में प्रेम ही ईश्वर है और ईश्वर ही प्रेम है। अकाल पुरख की आराधना ही जीव का परम मनोरथ है। इस मनोरथ की पूर्ति गुरु-कृपा से संभव है। गुरबाणी में अन्यत्र भी तन-मन से प्रभु की महिमा का गायन करने हेतु प्रेरित किया गया है :

अंतरि गुरु आराधणा जिहवा जपि गुर नाउ ॥
नेत्री सतिगुरु पेखणा स्रवणी सुनणा गुर नाउ ॥
सतिगुर सेती रतिआ दरगह पाईऐ ठाउ ॥
कहु नानक किरपा करे जिस नो एह वथु देइ ॥
जग महि उतम काढीअहि विरले केई केइ ॥
(पन्ना ५१७)

जो भाग्यशाली जीव सतिगुरु की रहमत से प्रभु-प्रेम में रंग जाते हैं उन्हें कण-कण में, घट-घट में परमेश्वर के ही दीदार होते हैं। वे सब में बसते प्रभु को पहचान लेते हैं। उन्हें परमेश्वर का मिलाप नसीब हो जाता है। ऐसी परमावस्था को प्राप्त करने वाले हर पल उठते-बैठते, सोते-जागते उसी एक की ही आराधना करते हैं :

ऊठत बैठत सोवत धिआईऐ ॥
मारगि चलत हरे हरि गाईऐ ॥ (पन्ना ३८६)

संपूर्ण असटपदी में गुरु-मर्यादा एवं एक परमेश्वर से जुड़ने की प्रेरणा है। नश्वर पदार्थों एवं सम्बंधों का मोह त्यागकर सदा कायम रहने वाले परमेश्वर के चरणों से प्रीति जोड़ने से लोक-परलोक सफल होता है।

. . . सुपने जिउ संसारु ॥

(पृष्ठ ४१ का शेष)

रूप-रंग सब नष्ट होने वाले हैं :

--कहां सु घर दर मंडप महला कहा सु बंक सराई ॥
कहां सु सेज सुखाली कामणि जिसु वेखि नीद न पाई ॥
कहा सु पान तंबोली हरमा होईआ छाई माई ॥२॥
(पन्ना ४१७)
--रैणि गवाई सोइ कै दिवसु गवाइआ खाइ ॥
हीरे जैसा जनमु है कउडी बदले जाइ ॥
(पन्ना १५६)

जिस जीवन से हम परम प्रभु को पा सकते हैं उसे हम भोग-विलास में समाप्त कर रहे हैं। कभी इस पर गंभीरता से नहीं सोचते। मरना अवश्य है :

दुलभ जनमु पुंन फल पाइओ बिरथा जात अबिबेकै (पन्ना ६५८)

अकलमंदी इसी में है कि हम जीवन और मृत्यु के रहस्य को समझकर मृत्यु के स्वागत की तैयारी करें। इसमें घबराहट कैसी? इस घबराहट से मुक्त होने का केवल एक ही उपाय है--हरि-सिमरन। हरि का सिमरन करने से जीवन सफल हो जाता है :

हरि हरि हरि हरि हरि हरि हरे ॥
हरि सिमरत जन गए निसतरि तरे ॥
(पन्ना ४८७)

ख़बरनामा

बाढ़ में मारे गए राजपुर भाटा के लोगों के वारिसों को दी गई आर्थिक मदद

श्री अमृतसर : २९ नवंबर : जम्मू कश्मीर के ज़िला राजौरी के गांव राजपुर भाटा के बाढ़ में मारे गए बाराती लोगों के वारिसों को शिरोमणि गु. प्र. कमेटी की तरफ से ५०-५० हज़ार की राशि आर्थिक सहायता के रूप में दी गई। सहायता देने पहुंचे शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के अपर सचिव स. दिलजीत सिंघ ने बताया कि ४ सितंबर को स. सुखविंदर सिंघ सुपुत्र स. भगत सिंघ की बारात बस द्वारा गांव राजपुर भाटा से रवाना हुई जिसमें ६६ व्यक्ति शामिल थे। यह बस बाढ़ की चपेट में आ गई तथा सभी बराती बह गए। उन्होंने बताया बरामद हुई लाशों के आधार पर सरकार द्वारा एलाने गए ५१ मृतकों के वारिसों को जत्थेदार अवतार सिंघ द्वारा हुए आदेश के अनुसार आर्थिक मदद प्रदान की गई है।

श्री अनंदपुर साहिब के ऐतिहासिक किलों के रखरखाव के लिए १२-सदस्यीय कमेटी गठित

श्री अमृतसर : ४ दिसंबर : श्री अनंदपुर साहिब का ३५० वर्षीय दिवस मनाने जा रही शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी द्वारा श्री अनंदपुर साहिब में स्थापित किए गए पांच ऐतिहासिक किलों के रखरखाव के लिए जत्थेदार अवतार सिंघ, अध्यक्ष, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने १२-सदस्यीय कमेटी गठित की है। इस कमेटी में वरिष्ठ उपाध्यक्ष स. रघूजीत सिंघ, कनिष्ठ उपाध्यक्ष स. केवल सिंघ बादल, महासचिव स. सुखदेव सिंघ और कार्यपालिका सदस्य स. रजिंदर सिंघ महिता, स. करनैल सिंघ पंजोली, स. निरमैल सिंघ जौलाकलां के अलावा सचिव स. दलमेघ सिंघ, स. रूप सिंघ, स. सतबीर सिंघ तथा अपर सचिव स. दिलजीत सिंघ सदस्य होंगे। इस कमेटी के कोआर्डिनेटर उप सचिव स. जगीर सिंघ होंगे।

जत्थेदार अवतार सिंघ ने बताया कि शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा कार सेवा के माध्यम से पांच किलों के रखरखाव की सेवा आरंभ हो चुकी है, जो १९ जून, २०१५ तक सम्पूर्ण हो जाएगी। उन्होंने बताया कि किला अनंदगढ़ की कार सेवा बाबा लाभ सिंघ द्वारा करवाई जा रही है। किला अनंदगढ़ की दीवारों तथा कमरों को ज्यों का त्यों बनाए रखते हुए जंगों का इतिहास दर्शाता संग्रहालय स्थापित किया जाएगा। किला तारागढ़ की कार सेवा बाबा दिलबाग सिंघ (डेरा बाबा सुलक्खण सिंघ) द्वारा करवाई जा रही है। उन्होंने बताया कि इस किले का भाई घनईया जी के जीवन तथा अन्य ऐतिहासिक तर्ज़ पर नवीनीकरण किया जाएगा। इस किले की इमारत में डिसपेंसरी तथा बावलियों की संभाल की जाएगी। किला लोहगढ़ की कार सेवा बाबा जोगिंदर सिंघ डुमेली

वालों द्वारा करवाई जा रही है। इस किले में प्राचीन रहंट वाला कुआं तैयार किया जाएगा तथा हाथों से प्राचीन शस्त्र बनाने का कारखाना लगाया जाएगा एवं भाई बचित्तर सिंघ की बहादुरी को दर्शाती यादगार बनाई जाएगी। जत्थेदार अवतार सिंघ ने बताया कि किला होलगढ़ की कार सेवा बाबा अमरीक सिंघ पटियाला वाले करवा रहे हैं। इस किले में भाई नंद सिंघ की याद को ताज़ा कराती एवं इतिहास दर्शाती एक लायब्रेरी बनाई जाएगी। इसी प्रकार किला फ़तहिगढ़ की कार सेवा बाबा बचन सिंघ (दिल्ली वाले) द्वारा करवाई जा रही है। उन्होंने बताया कि इस किले में लड़के एवं लड़कियों की गतका (मार्शल आर्ट) अकादमियां स्थापित की जाएंगी तथा प्राचीन कुएं की संभाल भी की जाएगी।

जत्थेदार अवतार सिंघ ने बताया कि यह गठित की गई कमेटी पांचों किलों की कार सेवा को अपनी देख-रेख में पूरा करवाएगी। उन्होंने कहा कि श्री गुरु तेग बहादर साहिब द्वारा सुशोभित इस पवित्र नगर श्री अनंदपुर साहिब के ३५० वर्षीय स्थापना दिवस को पूरी श्रद्धा-भावना एवं उत्साह से मनाया जाएगा।

संविधान की धारा-२५-बी खत्म हो
जबरदस्ती धर्म-परिवर्तन कराना गलत : जत्थेदार अवतार सिंघ

श्री अमृतसर : १३ दिसंबर : शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के अध्यक्ष जत्थेदार अवतार सिंघ ने कहा कि सिक्ख एक अलग कौम है तथा सिक्खों के रीति-रिवाज़ भी अलग हैं। सिक्ख हमेशा दस गुरु साहिबान द्वारा दर्शाए मार्ग पर चलते हैं। संविधान की धारा-२५-बी का सिक्खों के साथ कोई संबंध नहीं है। यह धारा सिक्खों को अपने बहुत-से अधिकारों से वंचित रखने वाली है, इसलिए इसे खत्म कर देना चाहिए।

जत्थेदार अवतार सिंघ ने कहा कि भारत बहु-धर्मी देश है तथा प्रत्येक धर्म अपने स्थान पर सम्माननीय है। अपने धर्म में परिपक्व रहना प्रत्येक भारतीय नागरिक का मौलिक अधिकार है, इसलिए किसी भी संस्था द्वारा दूसरे धर्म के लोगों को लालच देकर अपने धर्म में मिलाना ठीक नहीं है। उन्होंने कहा कि अपनी मर्ज़ी से कोई भी नागरिक किसी भी धर्म में रह सकता है, मगर किसी की गरीबी आदि का फायदा उठाकर उसका धर्म-परिवर्तन करवाना अनुचित है तथा भारत की बहु-धर्मी संस्कृति की तौहीन है। उन्होंने कहा कि इससे पहले मुगल राज्य के समय भी जबरदस्ती धर्म-परिवर्तन करवाए जाने की लहर चली थी। सिक्खों ने इस लहर का इतने ज़ोरदार ढंग से विरोध किया था कि वे जान कुर्बान करने से भी नहीं हिचकिचाए थे। उन्होंने सरकार से अपील की है कि ज़बरदस्ती धर्म-परिवर्तन करवाए जाने की रोकथाम हेतु सख़्त कानून बनाया जाए ताकि किसी की धार्मिक आज़ादी को ठेस न पहुंच सके।

प्रिंटर व पब्लिशर स. दलमेघ सिंघ ने गोल्डन आफसेट प्रेस, गुरुद्वारा रामसर साहिब, श्री अमृतसर से छपवा कर मालिक शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के लिए कार्यालय, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर से प्रकाशित किया। प्रकाशित करने की तिथि : ०१-०१-२०१५